

**WILLIAMSON CYCLES**  
 ALL THE LATEST  
 BICYCLES  
 AND MOTOR CYCLES  
 FOR SALE  
 10, BATTERY  
 ROAD, BOMBAY



FOUNDED BY SIR PHEASANT

VOL. XX NO. 18

BOMBAY, SATURDAY

**SHIPPING**

**SHIPPING**

**BANKING**

**BANKING**

**THE NIPPON YAMEN**  
 (Incorporated in Japan)  
 Regular Service to Japan via Singapore  
 Consisting of Steamers and Freighters

| Steamer        | Capitan      | Tons  | Arrival  | Depart   |
|----------------|--------------|-------|----------|----------|
| Morikawa       | M. Okenaka   | 400   | 10th Mar | 10th Apr |
| Awa Maru       | N. Nari      | 3,000 | 14th Mar | 14th Apr |
| Saka Maru      | Y. Nakagawa  | 3,500 | 17th Mar | 17th Apr |
| Yamashiro Maru | T. Kinoshita | 3,500 | 20th Mar | 20th Apr |
| Yamashiro Maru | T. Kinoshita | 3,500 | 23rd Mar | 23rd Apr |
| Yamashiro Maru | T. Kinoshita | 3,500 | 26th Mar | 26th Apr |
| Yamashiro Maru | T. Kinoshita | 3,500 | 29th Mar | 29th Apr |
| Yamashiro Maru | T. Kinoshita | 3,500 | 31st Mar | 31st Apr |

**THE HONGKONG & SHANGHAI**  
 STEAMSHIP CO. LTD.  
 (Incorporated in Hongkong)  
 Regular Service to Hongkong, Shanghai, Canton, etc.

| Steamer       | Capitan      | Tons  | Arrival  | Depart   |
|---------------|--------------|-------|----------|----------|
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 10th Mar | 10th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 13th Mar | 13th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 16th Mar | 16th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 19th Mar | 19th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 22nd Mar | 22nd Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 25th Mar | 25th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 28th Mar | 28th Apr |
| SS. GREYHOUND | W. J. Duggan | 3,500 | 31st Mar | 31st Apr |

**THE EAST INDIA**  
 BANK, LIMITED  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE YOKOHAMA SPECIE**  
 BANK, LIMITED  
 (Incorporated in Japan)  
 Capital Yen 100,000,000

| Branches  | Capital         | Reserve        |
|-----------|-----------------|----------------|
| Bombay    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Calcutta  | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Canton    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Cebu      | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Hankow    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Harbin    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Hongkong  | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Kobe      | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| London    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Lyons     | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Manila    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Peking    | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Shanghai  | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Singapore | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Tientsin  | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |
| Yokohama  | Yen 100,000,000 | Yen 10,000,000 |

**THE INDUSTRIAL & EXCHANGE**  
 BANK OF INDIA, LIMITED  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**P. & O.**  
 AND  
**THE TISSOT INDIA**  
 (Incorporated in England)  
 MAIL & PASSENGER SERVICE

| Date     | Steamer | Tons  | Arrival  | Depart   |
|----------|---------|-------|----------|----------|
| 10th Mar | MAKURA  | 4,000 | 10th Mar | 10th Apr |
| 13th Mar | MAKURA  | 4,000 | 13th Mar | 13th Apr |
| 16th Mar | MAKURA  | 4,000 | 16th Mar | 16th Apr |
| 19th Mar | MAKURA  | 4,000 | 19th Mar | 19th Apr |
| 22nd Mar | MAKURA  | 4,000 | 22nd Mar | 22nd Apr |
| 25th Mar | MAKURA  | 4,000 | 25th Mar | 25th Apr |
| 28th Mar | MAKURA  | 4,000 | 28th Mar | 28th Apr |
| 31st Mar | MAKURA  | 4,000 | 31st Mar | 31st Apr |

**THE HOLLANDSCH INDISCH**  
 FAIRBANKS BANK  
 (Incorporated in Holland)  
 Capital Gld. 1,000,000

| Branches  | Capital        | Reserve      |
|-----------|----------------|--------------|
| Bombay    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Calcutta  | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Canton    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Cebu      | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Hankow    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Harbin    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Hongkong  | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Kobe      | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| London    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Lyons     | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Manila    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Peking    | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Shanghai  | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Singapore | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Tientsin  | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |
| Yokohama  | Gld. 1,000,000 | Gld. 100,000 |

**HONGKONG & SHANGHAI**  
 BANKING CORPORATION  
 (Incorporated in Hongkong)  
 Capital HK\$ 1,000,000

| Branches  | Capital        | Reserve      |
|-----------|----------------|--------------|
| Bombay    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Calcutta  | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Canton    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Cebu      | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Hankow    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Harbin    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Hongkong  | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Kobe      | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| London    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Lyons     | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Manila    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Peking    | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Shanghai  | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Singapore | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Tientsin  | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |
| Yokohama  | HK\$ 1,000,000 | HK\$ 100,000 |

**THE UNION BANK**  
 OF INDIA, LIMITED  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE BANK OF MORA**  
 LTD.  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE INDUSTRIAL & PRUDENTIAL**  
 ASSURANCE CO. LTD.  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE PUNJAB NATIONAL**  
 BANK, LIMITED  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE BOMBAY TRADING**  
 CO. LTD.  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |

**THE EASTERN BANK**  
 LTD.  
 (Incorporated in India)  
 Capital Rs. 1,00,00,000

| Branches  | Capital         | Reserve       |
|-----------|-----------------|---------------|
| Bombay    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Calcutta  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Canton    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Cebu      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hankow    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Harbin    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Hongkong  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Kobe      | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| London    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Lyons     | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Manila    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Peking    | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Shanghai  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Singapore | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Tientsin  | Rs. 1,00,00,000 | Rs. 10,00,000 |
| Yokohama  | Rs. 1,00,00,000 | Rs.           |

**W A W I R E S**

Superior Make

Testing Sets, Heating Apparatus, Boilers, Toasters, Irons, Heating Plates, Watchman's Clocks, Fancy Presentation Table Lamps, Illumination Strips.

Also Pumps, Motors, A.C. and D.C. Fans, Etc.

Prices on Application.

**Fresh Stock of Boots and Shoes, etc., etc.**

LARGE REDUCTIONS IN PRICES.

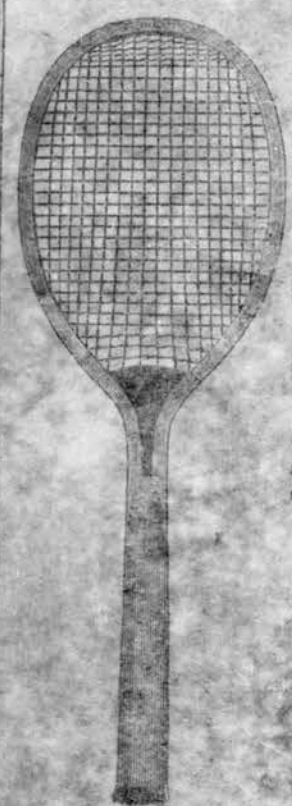
Albert Slipper S.S. Rs. 3-10 Million Shoe S.S. Rs. 4-10 Million Boot S.S. 5-14 Monsoon boot S.S. 5-14

**SUTOR & Co.,**

Opposite Messrs. Philips & Co. above Dutch (Netherland) Bank 1st floor.

No. 115, Hornby Road, Fort, Bombay.

Agents:—The Western India Army Boot & Equipment Factory, Slon, Bombay.



**ENGLISH TENNIS RACKETS**  
(CURRENTED FRESH)

|                                       | Rs. | s. | p. |
|---------------------------------------|-----|----|----|
| E. H. Ayer's "S. N. D." C. Model each | 55  | 0  | 0  |
| Slabenger's "I. Z."                   | 52  | 3  | 0  |
| " " "Rushaw"                          | 28  | 8  | 0  |
| " " "Demon"                           | 27  | 8  | 0  |
| Spalding's "Gold Medal"               | 42  | 0  | 0  |
| R. A. Davis "Argus"                   | 55  | 0  | 0  |
| " " "Riscley"                         | 56  | 0  | 0  |
| T. H. Prosser "Invincible Phenomenon" | 52  | 8  | 0  |
| " " "Don"                             | 25  | 8  | 0  |

and a large variety of "DODHY'S" Tennis Rackets costing from Rs. 3-8-0 to Rs. 25/- always in stock.

A kind visit to the Show Rooms requested.

CATALOGUE FREE.

**DODHY & SONS,**

Kanta Terrace, Kalbadevi Road  
(Near Dhobi Talao)  
BOMBAY 2.

**THE ESSENTIALS OF LIFE.**

The Doctor is essential for your Health. The Lawyer is essential for your person and property. The Merchant is essential for your necessities in Life. Some Protection is essential for acquiring wealth and, Above all a policy with us is essential for you and your family.

"Because of our plans, our Terms, and especially

**Our Special Benefits:—**

For particulars of which, apply to:

**Branch Manager**

**THE GREAT EASTERN L. A. CO., LTD.,**

50-52, Churchgate Street, BOMBAY

**BECOME AN ACCOUNTANT**

Indispensable to Accountancy Students here desirous to know the requirements necessary for the profession in India, you should get a copy at once. Pages 208.

Price Rs. 1-11-0 net. By V. P. P. 1 Copy, Rs. 2-0-0 2 Copies Rs. 4-0-0 Six Copies Rs. 9-12-0.

Apply S. A. SHARANGDHAR, 79, Madewa St. Fort, Bombay.

**Re: INCOME TAX AND SUPER TAX**

Please consult

**SHARANGDHAR & CO.**

whose accounting experience extends over 25 years

at 54, Madewa Street, Fort, BOMBAY.

**SPRUE & CHRONIC DYSENTERY**

Permanently successful cure of the most distressing cases by our combined Drug and Diet treatment entirely original, and based upon rational and scientific principles still unknown to Allopathy. Consultation FREE by experts on SUNDAYS and MONDAYS only; also by Correspondence.

**THE INDIAN CHAMBER OF MEDICINES**

Opp. Bhikshar Tank, BOMBAY.  
Tele. Address: "LOKAVADYA"

**THE NAPIER ENGINEERING COMPANY.**

OFFICE WORKS AND FOUNDRY

BYCULLA.

CONSTRUCTION AND GENERAL ENGINEERING, SHIP BUILDERS, REPAIRERS, BOILER MAKERS, ELECTRICIANS, CIVIL ENGINEERS, DIE CASTING, PUMPING AND MILL MACHINERY, OXYACETYLENE CUTTING AND WELDING, BRIDGE BUILDING AND BOAT BUILDING.

Tele. No. 143. Telegram: Napier.

**OTTO-DE-ROSE NO. 1**

An Ideal Perfume for handkerchiefs. Scientifically made at our Laboratory. Absolutely pure and free from Spirit. Possesses charming odour of freshly cut Red Rose Flowers. Highly recommended by Rajas, Maharajas, etc. Price one dram Glass Stopped phial Rs. 2-3-0 per V. P. P.

S. PAUL & CO., Patners, Dept. B. O. 4, Hospital St., Dharamtola, CALCUTTA.

**KATOL**

STICKS

Destroys Mosquitoes, Rs. 1-8 per box.

**A. E. HASE & CO.,**

Princes St. cet. BOMBAY.

Our ba has from all Chemists & Druggists

**TAILORS FOR HIGH FOLKS**

(with prudence for prices.)

**ARAUJO FERNANDES & Co.**

Modern Tailors & On fitters

Princes Street, BOMBAY.

**AMRUTANJAN**

Is the last word in the cure for Aches and pains. 25 years of increasing sales prove this fact. Amrut ujan is the only Indian pain-balm used in millions of homes. It certainly.

**CURES ALL**

aches, pain, swelling sprain, stiff joint cold, cough, cuts, bruises, chilblains rheumatism, backache and a host of other pain troubles. Costs 10 Annas Sold Everywhere.

It kills and cures all **ACHES and PAIN**

**GANDHI CALENDER & Co.**

Drugging the eyes with any medicine in your eye. Are you a prey to the eye specialists' fall. Satisfied with it. "Divine Aid," "Bikar," "Atmosphere," etc. etc. Its cost is 2-3-0, plus p. and p. charges. It cures thousands.

All Eye diseases, Ear troubles, Head and Throat affections and Catarrhal affections yield to it unfailingly. Detailed literature free for request from

**ACTINA BUREAU.**

BATAVA (PUNJAB, B. C.)

**DON'T BE PUZZLED.**

Insist on Having Only

**S. C. SEAL'S.**

**INK TABLET**

which are brilliant and non-corrosive, cheap and good. Free samples to school masters, and merchants, Blue, Black Violet and Green with fancy tin box. Each kind 15 annas per gross, Red Rs. 1-6 per gross.

**AGENTS WANTED.**

**SARAT CHANDRA SEAL,**

15-3, Lakshmi Datt's Lane, P. O. BAGHBAZAR, CALCUTTA.

| STANDARD FOUNTAIN PENS |        |               |        |
|------------------------|--------|---------------|--------|
|                        | Rs. A. |               | Rs. A. |
| Watersman              | 0 18   | Swan          | 4 12   |
| Safety                 | 9 8    | Safety 2 1/2  | 6 12   |
| Self filling           | 9 8    | 300 (long)    | 7 0    |
| Nib                    | 4 8    | 500 (long)    | 14 0   |
| Blackbird              | 2 12   | Alexandra     | 3 4    |
| Comline                | 0 8    | Gravity style | 3 0    |
| Cameroon Safety        | 7 8    | Swan clip     | 19 12  |
|                        |        | King clip     | 0 0    |

Pen Refilling, Specialty

**LOVELOCK & Co**

15 KINGCHETTI ST. MADRAS.

No. 8, Waterloo Mansions  
Museum road, BOMBAY.

**THE ONLY PLACE IN INDIA WHERE HYDROCELE IS CURED BY QUALIFIED EXPERT CENT PER CENT**

by painless methods not necessitating confinement to bed. Patients attend to their daily avocations while under treatment.

**Apply: ELECTRO-THERAPEUTIST**

N. B.—If you hesitate in the least degree to secure the benefit of this treatment before undergoing it, may not bring your family Doctor with you to whom convincing proof will be adduced.

**REDUCED PRICES**

|                                |        |          |
|--------------------------------|--------|----------|
| Victory Brand Double Fillets   | 2 6 0  | Dosen.   |
| Carbon Paper Kolar             | 0 0    | Box.     |
| Brumby Blue or Red Pencils     | 4 0    | Dosen.   |
| Transparencies                 | 0 0    |          |
| Tales (Ready ground)           | 2 0 0  | Dosen.   |
| Windows covers (large Windows) | 0 0    | per 1000 |
| Regatta Cover                  | 1 0    | Indians  |
| Football                       | 3 0 0  | each     |
| Kavalace openings              | 1 4 0  |          |
| Bank of England Sailing        | 4 0 0  | Box.     |
| Dark Hand Pencils              | 1 4 0  | each     |
| Steel Drawing Leads            | 3 0 0  | Dosen.   |
| British S. S. (at contract)    | 0 12 0 | 4 doz.   |
| Die embossing (if contract)    | 2 0 0  | per 1000 |
| Masks or opaque covers         | 0 0 0  |          |

Ask for our illustrated catalogue.

**M. BURJOE & Co.,**

**STATIONERS, ENGRAVERS, RUBBER STAMP MAKERS,**

Head Office:—  
55, Feroz Road, Branch Kanta Building  
Telephone: 4504.

ESTABLISHED 1874.

**Oriental**

GOVERNMENT SECURITY LIFE ASSURANCE CO., LTD.

OFFICE.

| Offices   | BOMBAY | Offices  |
|-----------|--------|----------|
| AT        |        | AT       |
| Abmedabad |        | London   |
| Almora    |        | Madras   |
| Allahabad |        | Manila   |
| Banarasi  |        | Meerut   |
| Calcutta  |        | Poona    |
| Colombo   |        | Rangoon  |
| Delhi     |        | Rewari   |
| Kanpur    |        | Srinagar |
| Shimla    |        |          |

New Policies to 1930..... 1,54,34,700  
Total Funds..... 5,30,00,000  
Claims Paid..... 6,00,00,000  
Annual Income..... 90,00,000

**ABSOLUTE SECURITY, LOW PREMIUMS, SIMPLE CONDITIONS, LARGE BONUSES!**

For particulars apply to

**H. EDWIN JONES, F.F.A., A.I.A.**

Manager.

**ORIENTAL BUILDINGS, BOMBAY.**

**PHYSICIANS & SURGEONS**

Here is your requirement  
Soon in the days of Epidemics.

**ICLODINE**

Trilodo-ethyl-phenyl.  
The best Antiseptic.

Use it externally for: Wounds, Cuts Burns and Scalds.  
Use it internally for: Colds, Catarrh Bronchitis, Asthma, Influenza, Typhoid and Dysentery.

Particularly efficacious in the diseases of Women.  
WRITE FOR PARTICULARS TO—

**MADHAV AGENCY,**

GURGAON, BOMBAY.

Sole Agents:—India, Burmah, Ceylon, Mesopotamia and Persia  
Manufacturers:—ICLODINE Co., Ltd.,—Newcastle on Tyne.

Medicines prepared according to the principles of the latest and up-to-date scientific authorities and modified by us to suit Indian climate and temperament

**GUARANTEED CURE FOR**

**LEUCODERMA & LEPROSY**

Leucoderma or White skin does not easily change colour and the so-called unscientific pills and oils only aggravate and in going to cure the disease create new complications. But Behar Chemical Works proudly declare that to-day they are able to place before the public scientific remedies after laborious provings and tremendous expenses—remedies that are non-irritant non-mercurial, i.e., totally harmless even producing no reactions. These remove rapidly the white patches by supplying the lost pigments and expelling all impurities from the blood. Whatever the nature of the disease, hereditary poison or any other known and unknown source, infection, chronic, or acute cases, all skin eruptions due to deficiency of certain pigments of mercurial poisoning—all cases are cured by our specific pills for internal and external uses at Rs. 10 per set to last a month. Cured in 10 days. Postage extra. Write Mr. B. Sinha from Port Blair.—The medicines for the white patches were used on my son and the patient got too much benefit from its effects. A wonderful thing for the Leucoderma in the world which you are selling at such a cheap rate for the public.

Leprosy—whether Tubercular, Nodular, Lepa Macula Anasethics or Smooth Leprosy, mixed or para Leprosy—all the known varieties are promptly checked, and cured by our Scientific remedies including internal medicine and external drugs (application, fumigation and bath) which cost Rs. 5 per full set. Detailed information in literature sent free to all.

**10 LAST 45 DAYS—CURE IN 6 MONTHS.**

**J. N. SEN, L.H.M.S.**

**MEDICAL PRACTITIONER,**

Specialist in Leprosy and Skin Diseases and Biochemist. Proprietary Behar Chemical Works.

Office at JAMTARA, E. I. Ry. where all correspondence should be sent.  
Works and residence at ENRIAM E. I. Ry.

**CHEAPEST HOUSE FOR ALL KINDS OF FIRE ARMS.**

B. S. A. Guna and other English made guns, Double and Single, Rifles English and Americans.

**PISTOLS & REVOLVERS**

Colts, Manners, Webley and other well-known makers' Single barrel ejector and non-ejector guns, Cartridges of all kinds.

Tele. No. 5534—

**GOOLAMHOSEIN ALLIBHOY & Sons,**

382 ABDOUL REHMAN STREET, BOMBAY.

**Gents' Tailors and Outfitters**

ESTD 1870

Our tailoring department is under an expert master and able workman. Orders executed promptly and carefully. Please Phone 4008 to our representative.

**SWEDISH CLOTHES IN STOCK.**

**A. R. ABDURREHMAN & Co.**

20, CHURCHGATE STREET, FORT, BOMBAY.

PHONE NO. 4008.

**Fresh Consignment**

**Febroid Best American Leather**

Suitable for coach cushions, Furniture linings, Automobile Upholstering and Hoo

**SAMPLES AND QUOTATIONS SENT ON APPLICATION.**

**Standard Automobiles.**

18, HANDURST ROAD, BOMBAY.

Telegrams: "DEMAND" BOMBAY Telephone: 4491



NOTICES

NOTICE OF REMOVAL

OFFICERS of R. BOSSI and CO., and BOGGIANO and CO., in Liquidation, have been REMOVED to 4/8, HUMUM ST., Bombay, 1st April, 1922. C12538

NOTICE OF SALE.

FOR SALE—BUNGALOW, situate at Mathura, adjoining Parsoo Gymkhana, opposite Vora Sanatorium, bearing No. 151 and known as "Esmailli K. Neterwalla's New Bungalow." Apply to Messrs. VACHHA and Co., Solicitors, Hornby Road, or to MAHESHWARI THAKREBHAI, Khoka Bazaar, Bombay. C12576

MACHINERY FOR SALE.

One Continuous Dyeing Machine for 66" cloth.  
One Soaping and Washing Machine to work with above.  
One 66" 3 bowl starch Mangle, connected with 15 cylinders horizontal drying range 70" on face.  
One Mac Farlane Hank Dyeing Machine.  
All the Machines are of Messrs. J. H. Riley's make and very little used, and they can be seen in working order at the Tata Mills, Parol. Offers will be received by the Agents, THE TATA MILLS, LD., Navsari Buildings, Fort. C12588

NOTICE.

WANTED for the service of the Municipal Corporation, Bombay, an OFFICER to conduct the outside audit of the operations of the various Municipal departments. The Officer selected should have accounts experience or an accounts degree. Special value will attach to a knowledge of casting accounts and to previous experience in outside audit. The salary of the post will be Rs. 600-500. The Officer selected will be expected to sign an agreement for 5 years. He must be able to read a bicycle or a motor bicycle. Applications with copies of testimonials which will not be returned, should be made to the Municipal Commissioner, Bombay before the 1st May, 1922. H. B. CLAYTON, Municipal Commissioner, for the City of Bombay. Municipal Offices, Bombay, 30th March, 1922. C12601

NOTICE TO CONSIGNEES.

S.S. "SAIGON MARU" having arrived from Japan via Hongkong, Singapore and Colombo the Consignees of her Cargo, are requested to send in their Bills of Lading to this office for counter-signature without delay. No survey will be held on cargo damaged or in doubtful condition, unless a written application is received by the undersigned within seven days after the cargo has been discharged. Messrs. Ericsson and Richards, Company's appointed surveyors, will be attending Docks every morning to suit consignees. Cargo removed from the Landing Shed or warehouse is not entitled to survey. No bag cargo in single gunny will be surveyed. The bills for claims of shortage, damage and short-delivery etc., are to be sent to this office within one month from the date steamer's arrival, otherwise they will not be entertained. OSAKA SHOSHEN KAISHA, Bombay, 1st April, 1922. C12582

THE NATIONAL MEDICAL COLLEGE, BOMBAY

SESSION 1922-1923.  
THE COLLEGE reopens for the Grish-madhiweshana on the 15th June, 1922. New students will be admitted from the 8th to the 15th June.  
Requirements of admission into the College—(1) Certificate of having passed the Matriculation Examination of any National or other Indian University. (2) A certificate of good moral character signed by two gentlemen. (3) Admission fee of Rs. 5 with application.  
FEES AND DEPOSITS.  
The admission fee is required of every student entering the College, and is payable but once. TUITION—The tuition fee for the first year is one hundred and twenty rupees (Rs. 120) for each student, and is payable at the beginning of each term. This fee does not include laboratory fees. Breakage deposit—A deposit of Ten Rupees (Rs. 10) is required of each student at the beginning of each year.  
The fee of the students Association is Rs. 5 per term and is to be paid along with the college fees.  
Fees are not refundable at any time, except by special action of the college authorities.  
The Students Hostels—Arrangements for the residence of about 200 students are made in the newly built block in the college compound listed with the modern equipments. Students desirous of staying in the Hostel should register their names immediately by paying Rs. 2 as registration fees. Rooms will be distributed according to the priority.  
The curriculum consists of five years of two terms each.  
In the first year following subjects shall be taught:—(1) Inorganic Chemistry Theoretical and Practical, (2) Organic Chemistry, (3) General Biology (a) Botany and (b) Zoology, (4) Modern Languages—German or French or Hindi.  
Second and third years will be devoted to the study of oratory, Chemistry, Anatomy, Physiology, Materia Medica, Pharmacology, and Ayurvedic and Unani Pharmacy.  
The last year is the fourth and fifth years, will embrace the Clinical branches (1) Medicine, (2) Surgery, (3) Obstetrics, (4) Gynecology, (5) Therapeutics, (6) Mental Diseases, (7) Diseases of children and (8) Diseases of Ear, Nose, and Throat, (9) Ophthalmology, (10) Pathology and Bacteriology, (11) Hygiene, (12) Medical Jurisprudence, (13) Ayurveda.  
For full particulars apply to—  
Dr. D. D. SATHAYE, F.R.E.S., Superintendent, National Medical College, 2nd Victoria Cross Lane, (Near Purna Station), Mazagaon, Bombay. C12582

FINANCIAL.

EXCEPTIONAL opportunity for temporary investment of from ten to fifteen thousand Rupees or part of same. Apply Box No. 7886, Advt. Dept. "Bombay Chronicle." R3240

WANTED—A CAPITALIST with 50,000 for the engineering office in Bombay and Delhi good interest and 50 per cent share contract in hand of Rs. 1,20,000. Write to Box No. 7311, Advt. Dept., "Bombay Chronicle." R3302

TRADE ANNOUNCEMENTS.

K. M. P. PUSHMINA CAP: oval round or boat shape, neatly hemmed, in silk best Indian made cap for respectable Indians. Rs. 2-14; medium color. K. M. and FINE ARTS AGENCY, Sringeri Kr. R2935

KASHMIR GOODS—"Donegal Tweeds" Rs. 12 per suit length (7 1/2 yds. x 2 1/2). Hand picked fresh saffron Rs. 3 per Tola. Paper machine leather bags. Hive collected genuine lotus honey Rs. 1 per Tola. We supply embroideries, wood carving, everything obtainable in Kashmir at competitive prices. KASHMIR SUPPLIES SYNDICATE, Sringeri, (Kashmir). R3301

PROFESSION

BOMBAY HOMOEOPATHIC PHARMACY—63, Sandhurst Road, Bombay. Genuine Homoeopathic and Biochemic Remedies. Free consultations for the poor daily from 1 to 2 p.m. Consulting Physician, Dr. TRIKAMMAL A. BROKKE, M.D. R3259

DENTAL NOTICE

I shall be out of Bombay for one month from April 20.  
Mr. H. G. MOGHE, L.M. & S. L.D.S. (Eng.), Parvati Bhavan, Sandhurst Bridge. R3293

LEGAL NOTICES

NOTICE.

THE ATTENTION of our client, Mr. M. P. CONTRACTOR, has been drawn to the Notice for Sale on his account and at his risk of the property known as "Watson's Hotel", situate in Esplanade Road, Fort, appearing in the issue of the "Bombay Chronicle" of Saturday, the 1st day of April, 1922. Our client had agreed to purchase the said property but for reasons well-known to the Vendor, Mr. Bhanji Kanji, and his Attorneys, Messrs. Edgelow Gulabchand Wadia and Co., our client has under legal advice cancelled the contract for purchase. It is therefore notified that our client has nothing whatever to do with the said intended sale of the said property. Dated this 1st day of April, 1922. ARDESHIR HORMUSJI DINSHAW & CO., Attorneys for Mr. M. P. Contractor. C12603

NOTICE.

NOTICE IS HEREBY GIVEN that our clients, Messrs. ABDUL HOSEIN YEBALLI KACHWALLA and EBRAHIM YEBALLI KACHWALLA, have purchased the undermentioned property at an Auction Sale from Mr. N. H. Moos, Receiver appointed in S.D. No. 225 of 1920, on an Order dated 8th day of February, 1922, free from all claims and incumbrances. All persons having any claim or interest in or in the said property or any part thereof by way of sale, gift, inheritance, residence, use, trust, maintenance, possession, mortgage, lease, lien, charge or otherwise however, are hereby required to make the same known in writing to the undersigned at their office, Albert Building, Fort, Bombay, within 14 days from the date hereof, or otherwise the sale will be completed without reference to such claims, if any, and the same will be considered and treated as having been absolutely waived and abandoned. THE DESCRIPTION OF THE PROPERTY. All that piece or parcel of Government land or ground together with the messuages, tenements and dwelling houses standing thereon, situate, lying and being on the Eastern side of Shaikh Abdullah Doctor Street, without the Fort of Bombay, in the District of Bombay, containing by admeasurement 177 3/4 square yards or thereabouts, and assessed by the Collector of Municipal Rates and Taxes under C Ward No. 724, Street Nos. 149 and 155, and registered by the Collector of Land Revenue under No. 2603, New No. 6620, Old Survey No. 1025, and New Survey No. 4322, and bounded as follows, i.e. to say, on or towards the East by the Sweeper's passage, on or towards the West by the Shaikh Abdullah Doctor Street, on or towards the North by the property of Ebrahim Ghaswalla and on or towards the South by the property formerly belonging to Mohamed Yacoub bin Shera Adam and now to the Vendor. Dated this 1st day of April, 1922. BHAI SHANKER KANGA & GIRDHARILAL, Purchasers' Attorneys. 12605

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY.

TESTAMENTARY AND INTESTATE JURISDICTION.  
GEORGE V by the Grace of God, of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, and of the British Dominions beyond the Seas, King, Defender of the Faith, Emperor of India.  
Petition for Letters of Administration of the property and credits of RAJ-LAL MANEKJI, late of Bhavnagar, Sub-Hindu Inhabitant, retired pensioner widower.  
SHANTILAL CHUNILAL, of Bombay, Hindu Inhabitant, living on private income and residing at Gamdevi, without the Fort, Petitioner.  
All the persons claiming to have any interest in the Estate of the above-named deceased are hereby cited to come and see the Proceedings if they think fit, before the Grant of Letters of Administration.  
Witness Sir NORMAN CRANSTOWN MACLEOD, Knight, Chief Justice of Bombay, aforesaid this 30th day of March, in the year of our Lord One thousand nine hundred and twenty-two and in the twelfth year of our Reign.  
(Sd.) P. B. MALABARI, Registrar.  
The 31st day of March, 1922.  
Messrs. PANDIA & CO., Petitioner's Attorneys. C12604

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY.

TESTAMENTARY AND INTESTATE JURISDICTION.  
GEORGE V by the Grace of God, of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, and of the British Dominions beyond the Seas, King, Defender of the Faith, Emperor of India.  
Petition for Letters of Administration of the property and credits of RAJ-LAL MANEKJI, late of Bhavnagar, Sub-Hindu Inhabitant, retired pensioner widower.  
SHANTILAL CHUNILAL, of Bombay, Hindu Inhabitant, living on private income and residing at Gamdevi, without the Fort, Petitioner.  
All the persons claiming to have any interest in the Estate of the above-named deceased are hereby cited to come and see the Proceedings if they think fit, before the Grant of Letters of Administration.  
Witness Sir NORMAN CRANSTOWN MACLEOD, Knight, Chief Justice of Bombay, aforesaid this 30th day of March, in the year of our Lord One thousand nine hundred and twenty-two and in the twelfth year of our Reign.  
(Sd.) P. B. MALABARI, Registrar.  
The 31st day of March, 1922.  
Messrs. PANDIA & CO., Petitioner's Attorneys. C12604

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY.

TESTAMENTARY AND INTESTATE JURISDICTION.  
GEORGE V by the Grace of God, of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, and of the British Dominions beyond the Seas, King, Defender of the Faith, Emperor of India.  
Petition for Letters of Administration of the property and credits of RAJ-LAL MANEKJI, late of Bhavnagar, Sub-Hindu Inhabitant, retired pensioner widower.  
SHANTILAL CHUNILAL, of Bombay, Hindu Inhabitant, living on private income and residing at Gamdevi, without the Fort, Petitioner.  
All the persons claiming to have any interest in the Estate of the above-named deceased are hereby cited to come and see the Proceedings if they think fit, before the Grant of Letters of Administration.  
Witness Sir NORMAN CRANSTOWN MACLEOD, Knight, Chief Justice of Bombay, aforesaid this 30th day of March, in the year of our Lord One thousand nine hundred and twenty-two and in the twelfth year of our Reign.  
(Sd.) P. B. MALABARI, Registrar.  
The 31st day of March, 1922.  
Messrs. PANDIA & CO., Petitioner's Attorneys. C12604

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY.

TESTAMENTARY AND INTESTATE JURISDICTION.  
GEORGE V by the Grace of God, of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, and of the British Dominions beyond the Seas, King, Defender of the Faith, Emperor of India.  
Petition for Letters of Administration of the property and credits of RAJ-LAL MANEKJI, late of Bhavnagar, Sub-Hindu Inhabitant, retired pensioner widower.  
SHANTILAL CHUNILAL, of Bombay, Hindu Inhabitant, living on private income and residing at Gamdevi, without the Fort, Petitioner.  
All the persons claiming to have any interest in the Estate of the above-named deceased are hereby cited to come and see the Proceedings if they think fit, before the Grant of Letters of Administration.  
Witness Sir NORMAN CRANSTOWN MACLEOD, Knight, Chief Justice of Bombay, aforesaid this 30th day of March, in the year of our Lord One thousand nine hundred and twenty-two and in the twelfth year of our Reign.  
(Sd.) P. B. MALABARI, Registrar.  
The 31st day of March, 1922.  
Messrs. PANDIA & CO., Petitioner's Attorneys. C12604

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT BOMBAY.

TESTAMENTARY AND INTESTATE JURISDICTION.  
GEORGE V by the Grace of God, of the United Kingdom of Great Britain and Ireland, and of the British Dominions beyond the Seas, King, Defender of the Faith, Emperor of India.  
Petition for Letters of Administration of the property and credits of RAJ-LAL MANEKJI, late of Bhavnagar, Sub-Hindu Inhabitant, retired pensioner widower.  
SHANTILAL CHUNILAL, of Bombay, Hindu Inhabitant, living on private income and residing at Gamdevi, without the Fort, Petitioner.  
All the persons claiming to have any interest in the Estate of the above-named deceased are hereby cited to come and see the Proceedings if they think fit, before the Grant of Letters of Administration.  
Witness Sir NORMAN CRANSTOWN MACLEOD, Knight, Chief Justice of Bombay, aforesaid this 30th day of March, in the year of our Lord One thousand nine hundred and twenty-two and in the twelfth year of our Reign.  
(Sd.) P. B. MALABARI, Registrar.  
The 31st day of March, 1922.  
Messrs. PANDIA & CO., Petitioner's Attorneys. C12604

LEGAL NOTICES

NOTICE.

NOTICE IS HEREBY GIVEN that YALI MAHOMED HAJI ABU BAKR, has been drawn to the Notice for Sale on his account and at his risk of the property known as "Watson's Hotel", situate in Esplanade Road, Fort, appearing in the issue of the "Bombay Chronicle" of Saturday, the 1st day of April, 1922. Our client had agreed to purchase the said property but for reasons well-known to the Vendor, Mr. Bhanji Kanji, and his Attorneys, Messrs. Edgelow Gulabchand Wadia and Co., our client has under legal advice cancelled the contract for purchase. It is therefore notified that our client has nothing whatever to do with the said intended sale of the said property. Dated this 1st day of April, 1922. ARDESHIR HORMUSJI DINSHAW & CO., Attorneys for Mr. M. P. Contractor. C12603

NOTICE.

NOTICE IS HEREBY GIVEN that our clients, Messrs. ABDUL HOSEIN YEBALLI KACHWALLA and EBRAHIM YEBALLI KACHWALLA, have purchased the undermentioned property at an Auction Sale from Mr. N. H. Moos, Receiver appointed in S.D. No. 225 of 1920, on an Order dated 8th day of February, 1922, free from all claims and incumbrances. All persons having any claim or interest in or in the said property or any part thereof by way of sale, gift, inheritance, residence, use, trust, maintenance, possession, mortgage, lease, lien, charge or otherwise however, are hereby required to make the same known in writing to the undersigned at their office, Albert Building, Fort, Bombay, within 14 days from the date hereof, or otherwise the sale will be completed without reference to such claims, if any, and the same will be considered and treated as having been absolutely waived and abandoned. THE DESCRIPTION OF THE PROPERTY. All that piece or parcel of Government land or ground together with the messuages, tenements and dwelling houses standing thereon, situate, lying and being at Santli Street, without the Fort of Bombay, in the District of Bombay, containing by admeasurement 740 square yards or thereabouts, and assessed by the Collector of Municipal Rates and Taxes under "E" Ward No. 4235 and Street No. 7 and forming part of a large piece of land registered by the Collector of Land Revenue under Collector's Old No. 29 and others, New No. 1331 and others, Old Survey No. 831 and others and New No. Survey No. 123-3/3549 and others, and bounded as follows: i.e. to say, on or towards the East by the property of the Bombay Municipality, on or towards the West by a private Road, on or towards the North by Sauter Street and on or towards the South by Plot No. 18, and which said premises have been in the occupation of the Vendor's tenants. Dated this 1st day of April, 1922. BHAI SHANKER KANGA & GIRDHARILAL, Purchasers' Attorneys. C12606

AUCTION SALE.

BENNETT & CO., 129, APOLLO STREET, FORT.

AUCTION SALE OF SURPLUS AND UN-SERVICEABLE BARRACK AND HOSPITAL FURNITURE. Under instructions from Dy. Asst. Director of Military Works, Bombay, Messrs. BENNETT and Co. will on Tuesday the 4th April, 1922, at 2.30 p.m. (S.T.) sell by public auction at old gun carriage factory Colaba near Colaba Station. All the Surplus and unserviceable Barrack and Hospital furniture such as Iron and wooden beds, wire mattresses, aluminium index card cabinet, chairs, bed head frames, bamboo mosquito frames, reading stands, Laundries, tables, wooden bed tables, dinner wagons, etc., etc. The above is on view A deposit of 25 per cent. will be required at the time of sale. All articles purchased must be removed from the site before 8 p.m. Thursday the 6th April.

AUCTION SALE OF VERY VALUABLE BUNGALOW AT LANOVLA KNOWN AS "HOLIDAY HOME."

Under instructions from the Bombay Y. W. C. A. Messrs. BENNETT and Co. will, on SATURDAY, the 8th April, sell by Public Auction at 4.30 p.m. (S.T.) at their Rooms at 129, Apollo Street, Fort, the following:—All that piece or parcel of land or ground together with the messuages, tenements and dwelling houses standing thereon, measuring about one acre and thirty-three guntas situate at Mowza Lanovla, Taluka Mawal, in the District of Poona and known as "Holiday Home." For further particulars and conditions of sale apply to Messrs. Crawford, Bayley and Co., at Ewart House, Farnham Lane, Fort, or to the undersigned.

AUCTION SALE OF VALUABLE PROPERTY AT COOMBARWADA STREET.

Suit No. 22825 of 1920.  
N. H. Moos, Esq., Plaintiff, vs. Bai Ayashabai and others, Defendants.  
Under instructions from N. H. Moos, Esq., Receiver appointed in the above suit by an Order made in the same suit on the 8th day of February, 1922, Messrs. BENNETT and Co. will, on MONDAY, the 3rd April, sell by Public Auction at 3 p.m. (S.T.), on the premises the following:—All that piece or parcel of land of the quit and ground rent tenure situate at the Eastern side, Coombarwada Street, in the City of Bombay together with the messuage, tenement or dwelling house standing thereon, containing by admeasurement about 197 7/8 square yards or thereabouts and situated within the Registration District of Bombay and registered in the Collector of Land Revenue under Old No. 1863, New No. 8890, Old Survey No. 270, New Survey No. 4973 and assessed by the Assessor and Collector of Municipal Rates and Taxes under C Ward No. 751, Street No. 3-3-7 and bounded as follows, i.e. to say, on or towards the East by the passage, on or towards the West by the Coombarwada Street, on or towards the North by the property of Damodar Sootar and on or towards the South by the property of Kooze Keshav. For further particulars and conditions of sale apply to Messrs. N. C. Dalal and Co., Attorneys for the Receiver or to the undersigned.

AUCTION SALE OF CULTIVATING GROUND, CUTTING GRASS AND DRAWING TOLLY FROM TREES, ETC., FOR THE PERIOD OF ONE YEAR. Under instructions from the Municipal Commissioner for the City of Bombay, Messrs. BENNETT and Co. will, on MONDAY, the 3rd April, sell by Public Auction at 9 a.m. (B.T.), at Tardeo Flats Chowki, the rights of cultivating ground, cutting grass and drawing Tolly from the following places:—The right of cutting from the following places:—Old Sonapur ground at Worli, west of Curry Road station and east of B. B. and C. I. Rly., Antop Hill, New Mahomedan Cemetery, Clarke Road, Main Drain Road to the Villard Garden, south of Haines Road Cemetery, open drain Haines Road, and the bank on the east of the Reservoir open drain, Clerk Road, to the Pumping Station open drain from Clerk Road to the Reservoir Haines Road Cemetery, etc. Right of drawing Tolly for one year. Old burial ground at Haines Road, Battli-walla's Dharmshala Compound, Ainsley Road, Widow Pensioners' Home. The right of cultivating and cutting grass for one year. Sion and Worli Reclamation ground, Arthur Road, North-West Flats, Main drain lying between Arthur Road and Clerk Road, Flats North-West of Arthur Road, West side of Arthur Road, Reclaimed ground between Railway siding, Tardeo. For further particulars apply to the Municipal Commissioner's Office or to the Superintendent's Office at Northbrook Garden, or to the undersigned.

A RARE OPPORTUNITY.

AUCTION SALE OF VERY VALUABLE PROPERTY AT ESPLANADE ROAD KNOWN AS "WATSON'S HOTEL." Under instructions from Messrs. Edgelow Gulabchand Wadia and Co., Attorneys for the Vendor, the said property will be sold by public auction on Thursday the 6th April, 1922, at 2.30 p.m. (S.T.) at the old gun carriage factory Colaba near Colaba Station. The property is situate in Esplanade Road, Fort, and is bounded as follows: i.e. to say, on or towards the East by the property of the Bombay Municipality, on or towards the West by a private Road, on or towards the North by Sauter Street and on or towards the South by Plot No. 18, and which said premises have been in the occupation of the Vendor's tenants. Dated this 1st day of April, 1922. ARDESHIR HORMUSJI DINSHAW & CO., Attorneys for Mr. M. P. Contractor. C12603

AUCTION SALE OF VERY VALUABLE PROPERTY AT ESPLANADE ROAD KNOWN AS "WATSON'S HOTEL."

Under instructions from Messrs. Edgelow Gulabchand Wadia and Co., Attorneys for the Vendor, the said property will be sold by public auction on Thursday the 6th April, 1922, at 2.30 p.m. (S.T.) at the old gun carriage factory Colaba near Colaba Station. The property is situate in Esplanade Road, Fort, and is bounded as follows: i.e. to say, on or towards the East by the property of the Bombay Municipality, on or towards the West by a private Road, on or towards the North by Sauter Street and on or towards the South by Plot No. 18, and which said premises have been in the occupation of the Vendor's tenants. Dated this 1st day of April, 1922. ARDESHIR HORMUSJI DINSHAW & CO., Attorneys for Mr. M. P. Contractor. C12603

## BALL

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

April 1.  
Football  
and side

ly settled down to long, powerful strokes, although Oxford led during the first minute.

Cambridge gained a good half length before passing Fulham football ground, Oxford, without attempting to rush work, pulled well together. Cambridge led by barely one length after mile, time being four minutes twelve seconds.

The Light Blue Tuxwain brought the boat over the centre of the river before reaching Harrods, when Cambridge led by one and half lengths, rowing almost dead ahead of Oxford. At Hammersmith Bridge, Cambridge was still one and half lengths ahead, time being seven minutes fifty seconds.

Oxford made an effort at Chiswick Eyst, but the Light Blues were rowing well within themselves and still kept their lead, reaching Chiswick Steps two lengths in front, in twelve minutes four seconds.

After that, the race was a mere procession. Although the Dark Blues occasionally spurted, they could not reduce the lead. Cambridge drew three lengths ahead at Barnes Bridge after sixteen minutes, sixteen seconds, and they spurred hard and fast when there was nothing to fear, and won comfortably.

Oxford finished in rather ragged style and several of their crew appeared to be extremely distressed.

## EASY WIN FOR CAMBRIDGE

(REUTERS TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

Cambridge won the boat race by three and a half lengths.

The official time for the boat race today was nineteen minutes twenty-seven seconds.

LONDON, March 31.

Following an injury to a member of Oxford's crew which has necessitated a spare man's coming into the boat, the betting today was one to two on Cambridge.

## PREVIOUS RESULTS.

The following are the results of the University Boat Race since 1900:-

| YEAR | WINNER | TIME      | WON BY      |
|------|--------|-----------|-------------|
| 1900 | Cam.   | 18m. 45s. | 20 lengths  |
| 1901 | Oxford | 22m. 31s. | 2-5 lengths |
| 1902 | Cam.   | 19m. 3s.  | 5 lengths   |
| 1903 | Cam.   | 19m. 32s. | 6 lengths   |
| 1904 | Cam.   | 21m. 36s. | 4 lengths   |
| 1905 | Oxford | 20m. 35s. | 3 lengths   |
| 1906 | Cam.   | 19m. 25s. | 3 lengths   |
| 1907 | Cam.   | 20m. 26s. | 4 lengths   |
| 1908 | Cam.   | 19m. 20s. | 2 lengths   |
| 1909 | Oxford | 19m. 50s. | 3 lengths   |
| 1910 | Oxford | 20m. 14s. | 2 lengths   |
| 1911 | Oxford | 19m. 20s. | 2 lengths   |
| 1912 | Oxford | 22m. 5s.  | 3 lengths   |
| 1913 | Oxford | 20m. 53s. | 3 lengths   |
| 1914 | Cam.   | 20m. 23s. | 4 lengths   |
| 1920 | Cam.   | 21m. 11s. | 4 lengths   |
| 1921 | Cam.   | 19m. 45s. | 1 length    |

## NEWBURY PROGRAMME ABANDONED

(REUTERS TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

Heavy snowfall caused today's programme at Newbury, which included the Newbury Spring Cup, to be abandoned.

## CROSS-COUNTRY 10 MILES RACE.

(REUTERS TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

Glasgow.—The International Cross Country Ten-miles race run on Saturday was won by Guillemot (France), by 160 yards in 63 mins. 59 secs. Cotterill (England) was second, and Schmeleman (France) third. The team placing resulted: France first, with 63 points, England 65 Scotland 90 Wales 137 and Ireland 160.

## HOCKEY.

(REUTERS TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

England beat Scotland in Hockey today at Edgbaston by seven goals to one.

## BARRACKPORE RACES

(From Our Correspondent.)  
CALCUTTA, April 1.

THE BELVEDERE PLATE, Division III.—Distance 3 furlongs.  
Mr. Norman's POLETRAP, 8-2, Sleigh ..... 1  
Mr. Galstaun's GREEN DAME, 8-9, Harrison ..... 2  
Mr. Edward's WOLFEN, 8-9, O'Brien ..... 3  
Mrs. Ford's ADVISOR, 8-9, R. Grace ..... 4  
Totes paid.—Win Rs. 29; Places Rs. 18 and 30.

THE BELVEDERE PLATE, Division II.—Distance 3 furlongs.  
Messrs. Oshand and Mahomed's ROBINA, 8-9, O'Brien ..... 1  
Mr. Dase's BLUSTAR, 8-12, Higgins ..... 2  
Mr. Dase's SUNNY TIME, 8-8, Marland ..... 3  
Mr. Orie's PROCKEN HEART, 8-12, Seastream ..... 4  
Totes paid.—Win Rs. 41; Places Rs. 24, 25 and 70.

THE PARK PLATE.—Distance 5 furlongs.  
Mr. Galstaun's GREEN DAME, 8-4, Harrison ..... 1  
Mr. Pratt's BABY, 9-2, Reynolds ..... 2  
Mr. Brown's NIGGS, 8-3, Tenner ..... 3  
Mr. Banerji's BANNER, 9-2, Higgins ..... 4  
Totes paid.—Win Rs. 19; Places Rs. 14, 22 and 45.

THE SERAPPORE PLATE, Division II.—Distance 5 furlongs.  
Mr. Soutar's SHAPLEY, 9-11, Higgins ..... 1  
Mr. Pogose's CHAUNTRESS, 9-12, Sleigh ..... 2  
Mr. Marchmont's CYNERALD, 9-10, Andras ..... 3  
Mr. Hillard's DAILY BREAD, 8-13, O'Brien ..... 4  
Totes paid.—Win Rs. 35; Places Rs. 21 and 29.

THE SERAPPORE PLATE, Division I.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Galstaun's HURDY-GURDY, 8-4, Reynolds ..... 1  
Mr. Hugo's TORCHLIGHT, 8-0, Thompson ..... 2  
Mr. Poyote's THE O'MALLEY, 7-7, Orchard ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 15; Places Rs. 12 and 17.

THE CONSOIATION PLATE, Division I.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Mordison's KIPPY O'HARA, 7-7, McQuade ..... 1  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 2  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 3  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 4  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division II.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division III.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division IV.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division V.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division VI.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division VII.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division VIII.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division IX.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division X.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

THE CONSOIATION PLATE, Division XI.—Distance 7 furlongs.  
Mr. Soutar's GREEN BOY, 8-3, Walker ..... 1  
Mr. Smith's ARTHUR O'LEARY, 7-7, E. Trace ..... 2  
Owen's LESSON, 8-7, O'Brien ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 37 and 39.

Mr. Pardoe's AQUAE SOLIS, 9-5, Thompson ..... 1  
Mr. Colah's STRANGE LIKENESS, 9-0, Higgins ..... 2  
Totes paid.—Win Rs. 23 and 16; Places Rs. 26, 14 and 21.

## LUCKNOW RACES

(From Our Correspondent.)  
LUCKNOW, April 2.

THE MEDIUM PLATE.—Distance 4 mile.  
Mr. Macleod's LADY POLLY, 10-0, Thakur ..... 1  
Mr. Abdul Jamal Khan's AFFIMI, 10-0, 25 yards ..... 2  
Totes paid.—Win Rs. 14; Places Rs. 8 and 8.

THE POLO CUP.—Distance 3 furlongs.  
Capt. Willways Wilsey's JOHN WELBY, 10-7, Owner, scratch ..... 1  
Capt. Anderson's APRIL, 11-7 ed 11-0, Owner ..... 2  
Mr. Hobart's WILD OATS, 10-7 ed 10-9, 30 yards ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 10-8; Places Rs. 8 and 12-8.

THE LUCKNOW HURDLES.—Distance 2 miles over 8 furlongs.  
Capt. Walker's MAXIM, 11-7, Capt. Pirsi ..... 1  
Capt. Ballentine's CRESCENT, 10-12, Owner ..... 2  
Capt. Havers's MAYO, 9-0, Abdul Ghani ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 10-8; Places Rs. 7 and 7.

THE MEDIUM PLATE.—Distance 1 mile.  
Capt. Arnold's DOUBLE CHIN, 10-0, Castleton, 45 yards ..... 1  
Capt. Willways Wilsey's JOHN WELBY, 10-7, Owner, scratch ..... 2  
Col. Barry Smith's ARABIAN KNIGHT, 10-0, Capt. Pirsi, 30 yards ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 37; Places Rs. 14 and 12.

THE LADIES' PLATE.—Distance 3 furlongs.  
Capt. Anderson's REUBEN, Mrs. Willoughby ..... 1  
Mr. Dutton's PICK-UP, Miss Bevan, scratch ..... 2  
Major St. Stewart's SUNSHINE, Mrs. West, scratch ..... 3  
Totes paid.—Win Rs. 40; Places Rs. 12-8 and 12.

THE POLO CUP.—Distance 3 furlongs.  
Capt. Perse's MOARL, 11-7, Owner, 10 yards ..... 1  
Capt. Watkin's RUMOUR, 10-7, Mrs. West, 10 yards ..... 2  
Totes paid.—Win Rs. 9; Places Rs. 7 and 12.

## IN AID OF THE DEPRESSED

TO THE EDITOR OF "THE CHRONICLE."

Sir,—We request to peruse the following few lines addressed to you on behalf of the Somvashia Samaj which forms part of the so-called depressed classes and hope that you will give your kindest thought to them. It is your well known sympathy for the cause of the helpless and the certainty of help that have emboldened us to approach you to-day and we feel sure that our appeal will not go in vain.

In these days of awakening and enlightenment when every community is working for progress and uplift and when brotherhood is almost a watchword in every phase of national activity, it is but natural that the so-called depressed classes should claim their due share of attention, but it is a sad truth that the depressed communities have been solely neglected hitherto. It must be admitted that some persons of light and feeling have done their level best to raise up and emancipate these miserable souls, but such people have been few and far between. The depressed classes have received but scant attention at the hands of the most and have never been a prominent objective in any of the programme. This condition of affairs is most lamentable and unless it is radically changed no platform of national work can hope for a shadow of success. What is needed is not so much of grandiloquent lectures and widely advertised lip-service as a true and upright heart that hearkens to the wailings of the poor and craves for the true natural unity and make for a solid foundation upon which a beautiful structure of India's glory can be erected.

With these words of introduction we beg to invite your attention to what little work our institution has done in this direction. With the limited fund at our disposal we have been conducting a night school for some years past where children of the depressed classes receive education in English and Marathi. A glance at the copy of the report submitted herewith will convince you at what sacrifice and trouble the schools are conducted, but a band of enthusiastic workers have made up their mind to make the institution a success and to crown their effort with fruition a noble band of donors have come forward to pay their generous contribution. However the help rendered is entirely inadequate to enlarge the field of activities. It is sheer want of sufficient fund that has constrained us to limit our energies to a single school, otherwise the institution would open school at every important place. It is with this view and with a desire to have our hands strengthened with monetary help that we make this appeal to your noble heart and draw forth from you all that is best in the cause of your suffering brethren. Money is undoubtedly a necessity with us and this letter is also written mainly with that intent in mind, but what we want is your warm heart, melting with pity and fellow-feeling. Yours, to,

K. ANDIRAM MANKOJI ROKDI,  
Secretary.

## RUN OVER BY A CAR.

At the Coroner's Court, on Sunday morning the Coroner held an inquest on Nimas Hazi touching the death of a man by a motor-car.

Khushal, who was run over by a motor-car on Ripon Road near the 10th mile, was walking along the road. Mill-hand said the deceased was his father. He heard house at 9 p.m. on the 1st April. A saw the alarm on the road and went to see if he could do anything. He saw a motor-car coming and saw the deceased being run over. He took him to the hospital where he succumbed to injuries.

Hansa Vithoba, a betel leaf seller said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue. He was on the hand side of the road near the tram-lines. A motor-car came very fast from behind and an alarm was raised that a man had been knocked down. He went up to the deceased and found him lying near the tram-lines. The car was driven away. Some Mohomedans were in the car.

Asphandier, a betel leaf seller, said he saw the deceased on the 1st April about 4.30 a.m. At that time he was seated at his shop. The deceased was walking along Ripon Road towards Parsi Statue.

## WHAT'S THE VERDICT?

Is it a brick-bat? Fear we not. INSIDE TYRE users are making gr. for them by preventing tyre sales and giving more mileage? NALSUM-PRADIN CO. Girgaon, Bombay.

FOR SALE  
KHADAR

FROM  
THE CONGRESS PANDAL  
AND

## KHADI NAGAR

which covered and protected  
our revered Delegates and  
Visitors at Ahmedabad last  
December.

Quality for Coatings etc. at Rs. 0-8-0  
per yard.

Quality for Shirtings etc. at Rs. 0-7-0  
per yard.

(1) Cash in advance along with  
the order.

(2) 8 1/2% discount allowed to pur-  
chasers of Khadi worth  
rupees one hundred or  
above.

(3) No order below Rs. 10/-  
will be accepted.

(4) Packing charges extra.

Apply to the Manager,

THE GUJARAT PRANTIK  
SAMITI KHADI BHANDAR.

Astodia Oliphant Road,  
AHMEDABAD.

## AN

ENDOWMENT POLICY.  
with the  
BOMBAY LIFE ASSURANCE  
COMPANY, LTD.

Offers an absolutely safe invest-  
ment and a sure means of securing  
sufficient provision for old age or  
for one's family in the event of  
early death.

For particulars, please apply to the  
MANAGER, 67, Apollo Street,  
BOMBAY.

NEW ERA INSURANCE CO.,  
LIMITED.

The Board of Directors consists of able  
professional men. The rates of premium  
well within easy reach of all classes of  
people. Policy contract contains no  
onerous terms and conditions. Protection  
against accident and permanent  
sickness. Every loading phase of Life  
Insurance to be found with the Company.  
For particulars apply to—

## AGENTS WANTED.

Messrs. D. G. VIN & CO.,  
Managing Agents,  
Examiner Press New Building,  
Meadows Street, Fort, Bombay.

## SAFES AND LOCKS

During the last disastrous fire in  
the Mulji Jetha Market. Only  
India Safe Manufacturing Co.'s  
Safes remain intact.

THE INTERNATIONAL BANK  
ING CORPORATION.

Messrs. Lawrence and Mayo, Ltd.  
(Sole) Messrs. S. Gahagan and  
Co., Messrs. Khatao Makenji and  
Co., Messrs. P. Karanj, Esq.,  
(Partner of Messrs. Batiwala and  
Karani Share and Stock Brokers.)  
Soliciting inquiries and orders.

INDIA SAFE MANUFAC-  
TURING CO.

Show Room:—290, Shaik Memon  
Street near Mulji Jetha Market.  
Factory:—Jacob's Circle, Clerk

Road near Simplex Mills,  
BOMBAY.

## GODREJ SAFES.

17 large Safes supplied to Messrs  
Ewart Latham and Co. after  
their experience of other safes in  
the recent fire in their premises.

272 Safes supplied for Savings  
Bank India and Burma, after a  
severe competitive test by fire  
held in Calcutta in the Director-  
General, Posts and Telegraphs,  
in the July 1912.

210 Burglar Resisting Safes,  
recently supplied to Government  
to replace other Makers' safe  
that had been burgled.

By APPOINTMENT TO H. E. THE  
GOVERNOR.

M. S. Mint and a number  
of Indian Banks.

## DIXON'S ENGINEERING WORKS

(H. I. DIXON & CO., LTD.)  
Masagon Road, BOMBAY.  
Established 1886. On Government List.  
CONSTRUCTIONAL AND GENERAL  
ENGINEERS.  
Iron and Brass Founders, Copper-Smiths,  
Plumbers.

SHIP REPAIRERS.  
STORE SUPPLIERS.  
Special attention given to enquiries from  
Bombay and the Mofussil for every de-  
scription of Stores, Plant Machinery,  
Hardware, etc.

JAMES MACKINTOSH & CO.,  
Secretaries and Treasurers,  
17/18, Elphinstone Circle, Fort.  
Office Tel. 796 Works Tel. 2154.  
Telegrams: "NOXID."

## THE BOMBAY CHRONICLE.

Monday, April 3, 1922.

## IN JAIL.

"I used to think a prison was  
a fearful place,  
Where only knaves and fools were  
whipped for sin;  
But now it seems a shrine of  
godliness and grace,  
Since you went in.  
I used to think a prisoner, a leprous  
wretch of taint  
The proper thing for righteousness  
to shun;  
But now the meanest felon is as  
hallowed as a Saint—  
Since you are one."

S. A. de Witt in "Good Morning."  
The account which we publish else-  
where of the treatment meted out to  
Mahatma Gandhi in Yeravda Jail will be  
read by every human being, who is  
not altogether lost to a  
sense of decency of things,  
with feelings of unutterable pain. The  
Mahatma, of course, does not want any  
complaints to be made about his life in  
jail, but, as Mr. C. Rajagopalachari  
says, it was hoped that the Government  
of Bombay would treat the great  
prisoner, if not exactly as he deserved  
or as we would want, at least as civilised  
Governments would treat their more im-  
portant prisoners of war. Modern  
civilisation has still to reach that stage  
when there will no more be political  
prisoners—that is, when honest expres-  
sion of opinion will not be  
a crime—but, fortunately, in  
many Western countries political  
prisoners are even now detained under  
conditions of honour and courtesy due  
to honest opponents of opinion. In this  
country the law still remains to be  
"civilised" in this respect, though in  
several provinces differential treatment  
is being given to certain political  
prisoners. The Government of Bom-  
bay, for reasons best known to them-  
selves, have been opposed to such  
differential treatment, for, according to  
Mr. Hayward, the penal law does not  
recognise "political prisoners", evident-  
ly in this "progressive" part of the  
country only, for in other provinces  
officials have been able to know who are  
political prisoners. Apart from this,  
however, and apart also from the state-  
ment made by Sir W. Vincent in the  
Legislative Assembly and the recent  
declaration in Parliament by Lord  
Winterston that "the man, who, from  
presumably honest motives expressed  
political views, the public expression of  
which was a legal offence, should not  
be humiliatedly treated or classed with  
criminals whose offences showed a  
moral obliquity," the courtesy and de-  
ference shown to the Mahatma in  
Sabarmati jail and in Court had led  
everyone to hope that in his case at  
least the authorities concerned would  
rise above all pettiness. The sudden re-  
moval of the saintly prisoner from  
Sabarmati jail and the mystery observed  
about his destination caused some mis-  
givings about the attitude of the  
authorities, misgivings which unfor-  
tunately have now proved too true. The  
Government of Bombay regard the  
Mahatma as a common prisoner and  
treat him as such. Do they forget that  
the Indian people regard him as a hero  
and a saint and that their opinion is  
shared by the outside world, especially  
of Asia? A local contemporary went  
out of its way the other day to inform  
the Indian public that the decision to  
arrest the Mahatma was taken by the  
Government of Bombay, including the  
Ministers. Have the Indian members  
of the Government of Bombay forgotten  
that if the honour of any Indian is the  
honour of every Indian, the honour of  
India's saintliest son and the world's  
greatest man must be infinitely more  
precious? Mahatma Gandhi is not  
humiliated by the treatment given to  
him in jail. The humiliation is that  
of the country, of us all  
of humanity. There is  
nothing for grief—except  
the shame we have deserved  
for not recognising the political

to our country, the Mahatma would  
not have been in jail to-day. How,  
then, are we to wipe off the shame?  
Not by showing our resentment at the  
Mahatma's treatment in jail, but by a  
renewed and united determination to be  
worthy of the great sacrifice that he has  
made for us—by carrying on, to the  
letter and the spirit, his injunction to  
put the Englishman at ease (however-  
much the revelations about Mahatma's  
jail life may make the  
task seem difficult) and to see  
that the constructive work of the  
Congress goes on "with clockwork regu-  
larity and with the speed of the  
Punjab Express."

## WHERE WE STAND.

In an article in "The Outlook" in  
last week we find the following state-  
ments:

"It is waste of time to argue with  
the Turk about ethnographical frontier.  
The whole principle of nationality is  
objectionable to him for religious no  
less than for political reasons. His  
ideal is the restoration of the Ottoman  
Empire, which drew its strength from  
religion and its weakness from racial  
reasons. That also, it appears, has  
become the ideal of the Indian Maho-  
medan leaders who at home are the  
most ardent of Nationalists. Through  
the mouth of the Indian Government  
they have intimated to the British  
Government that, unless they evacuate  
Constantinople, hand over Mecca and  
Medina to the suzerainty of the  
Sultan and restore Smyrna and Thrace  
to the Turks, there will be trouble in  
India. In consenting to become the  
megaphone for such demands the  
Indian Government has taken an un-  
usual step. It should be noted that  
in each case we are asked to repudiate  
a treaty that we have signed. It  
should be noted also that if the British  
Empire had never existed the Indian  
Moslems would not have become  
excited about the fate of Thrace or  
Constantinople, they would not have  
cared who controlled the Holy Places  
so long as the annual pilgrimage was  
not interfered with. They have been  
instructed in these subjects, and the  
object of their instructors has been to  
make things unpleasant for us. The  
proposition that our ally, King  
Hussein, who has a much better  
claim upon the Hedjaz than the Turks  
ever had, should hand over the control  
of the Holy Places to the Sultan seems  
hardly worth arguing; but a respect-  
able case can be made out for the  
evacuation of Smyrna by the Greeks,  
and on purely military grounds—for  
a frontier in Thrace wide enough to  
include on the Turkish side Enos,  
Midia and Adrianople. The Treaty of  
Sevres, it is generally agreed, ought to  
be revised. But that is not the point.  
The point is that the Muslims of India  
are endeavouring to force upon the  
British Government, by threats of  
riots in Calcutta and Bombay, a settle-  
ment of a question of European  
politics about which they know next  
to nothing, which involves the repu-  
diation or revision of treaties which  
we have signed, and which, whatever  
may be said for it on practical grounds,  
deliberately ignores the wishes of the  
majority of the populations in the  
countries concerned."

We venture to declare that that is not  
the point, and that the writer of the  
above words knows "next to nothing"  
of the question he is seeking to elucidate.  
We further venture to assert that the  
matter is not the settlement of a question  
of European politics, but the  
settlement of a question at  
issue between Asia and Europe, in  
which Asia, and the Muslims in particu-  
lar, are chiefly interested and of  
which the Indian Muslims and the Gov-  
ernment of India know a great deal more  
than the writer in the "Outlook" or any  
body else who can loftily regard the  
present opportunity merely as one for  
settlement of a question of European  
politics. What have the details of the  
government of Mecca and Medina got to  
do with Europe or with anyone except  
the Learned in Religion of the Muslim  
world? The writer must have been  
under a pathetic misapprehension when  
he wrote that the Indian Government's  
demand involved "the repudiation or re-  
vision of treaties which we have signed,"  
for apart from the Treaty of Sevres of  
which he admits the necessity for re-  
vision, all other open treaties, pledges and  
proclamations (at any rate all those to  
Muslim peoples) made by the British  
Government in connection with the  
Turkish question have been in fact re-  
pudiated.

But let us deal with his misapprehen-  
sions categorically. The complaint of  
Indian Muslims has lately been that  
the Turk appears too ready to accept  
ethnographical frontiers which are not  
recognised in the Islamic polity. But  
what is the present is not the restoration  
of the Empire; he has no wish

and administration of Syria, Mesopota-  
mia, Palestine and Arabia; nor do the  
Indian Muslims demand such restora-  
tion. The demand is only for the  
restoration of the juridical-religious  
rights of the Khalifa over the Holy Places  
of Islam, Mecca, Medina, Jerusalem and  
Kerbalah—i.e., his right to police the  
pilgrim's way and watch over the wel-  
fare of the people at the time of pil-  
grimage, to appoint, or have a veto over  
the appointment of, the Cadi, or reli-  
gious judge in the Holy Cities and the  
keepers of the sanctuaries, and other  
lesser rights and duties which it should  
not be difficult to arrange. The Turk-  
ish Sultan is at present the Khalifa, but  
it may not always be so; the religious  
demands of the Indian Muslims are not  
in the interests of the Turkish Sultan but  
in the interests of the Khalifah for all  
time. As to the Arabic-speaking  
peoples of the Ottoman Empire, the de-  
mand of the Turkish patriots and the  
Indians is the same; that "their fate  
(in the terms of the Turkish  
National Pact) must be decided  
freely expressed". The same, and nothing  
else, is the Turkish demand for Thrace.  
It is difficult to see how exception can  
honestly be taken to a demand for what  
is manifestly just and right. Once M.  
Venizelos tried a little trick which may  
have had effect upon the writer in "The  
Outlook." He counted as Greek all  
Muslims in the territories which he  
claimed who might, he chose to think,  
have had, at some time, a Greek ances-  
tor! The Muslim population of Thrace  
is made up of the remnant of vast Euro-  
pean Muslim populations which have  
been exterminated, all except that rem-  
nant, by Christian fanaticism. These  
people call themselves Turks, and are  
massacred as Turks by the surrounding  
Christians when they get the chance.  
The patriotic Turks cannot disown them,  
nor hand them over to the tender mercies  
of the brutal Greek without a vigor-  
ous protest. It will be news to the "Indian  
Mohamedan leaders" to hear that the  
"Indian Government" has acted as their  
mouthpiece. We wish it had; for that,  
in our opinion, would have gone a long  
way towards the solution of the Indian  
National problem. What the Govern-  
ment of India did was, in the position  
of a faithful agent of the Government of  
England, to transmit to the latter a true  
statement of the state of things in India,  
and convey a warning greatly needed at  
the present time. We know that Indian  
Muslims are not insensible to that de-  
cided statement by the Government of  
India, though unfortunately, owing to  
the ill effects of repression, their leaders  
cannot be on speaking terms with Gov-  
ernment. Still more do they appreciate,  
in the light of his resignation, the fine  
and upright services of Mr. Montagu, in  
his endeavour to make the Government  
of England redeem England's pledges  
and so regain prestige throughout the  
East. But the Government of India  
spoke upon its own account without  
collusion with the "Indian Mohamedan  
leaders." With the writer's statement  
about Thrace we quite agree; a frontier  
which included Enos Midia and Ardia-  
nople within Turkish territory would be  
acceptable to Turks and Indian Muslims;  
but we still think that the decision  
ought to be based on "the will of the  
populations freely expressed." King  
Hussein has certainly no better claim on  
the Hedjaz than the Turks ever had,  
since he and his ancestors for many  
generations swore allegiance to the Tur-  
kish Sultan as Khalifa; the family for  
many generations have eaten from the  
Turkish Sultan's hand, and been con-  
firmed in high and honourable rank at  
Mecca.

The real point is this that we, in India,  
can never admit that the Turkish ques-  
tion is one for settlement by European  
diplomats on the pretence that it is a  
little quarrel between Greece and Turkey.  
It was Mr. Lloyd George who, speaking  
in the name of England, in Jan. 1918  
promised in solemn terms, that the  
British were not fighting to deprive the  
Turks of Thrace and Asia Minor and  
Constantinople. This pledge was large-  
ly used in India for recruiting purposes.  
So were the various assurances with  
regard to the independence of the Arab  
races, and the sacred rights of the  
Khalifat. If solemn pledges given  
wholesale to vast numbers of British sub-  
jects in order to obtain their help when  
greatly needed, can be broken (as we  
have seen these open pledges broken)  
lightly in favour of secret agreements  
with foreign Powers, then the term  
British citizenship has no meaning; the  
ties which bound the nations to Great  
Britain have been broken; the honour of  
the British Empire is no more, and it  
had best be ended. The Government  
of India is now in the same boat with  
the people of India. It has been treated by  
the Government of England—or, at any  
rate its spokesman, Lord Curzon—like a  
dog. The question is, how far is it pre-  
pared to go with Indians in this matter?  
If the whole way, then a change of atti-  
tude on both sides will come naturally,  
and the end of India's troubles may be  
near. If the Government had occupied

Constantinople at a given moment, the  
Greeks would not have dared  
to enter Thrace. If the Brit-  
ish were to evacuate Constanti-  
nople now, the Greeks would soon be out  
of that unlucky country. If the British  
Government had not abetted and pro-  
tected them, the Greeks would never have  
landed at Smyrna. If the British Gov-  
ernment had not sanctioned an injustice,  
the Jews would not be having trouble  
now in Palestine. We ask, and we dare  
hope that the Government of India will  
also ask, that all these manifest  
and grievous wrongs shall be redressed, not  
for the honour of India—that has not  
been jeopardised—but for the honour of  
England, and the restoration of her real  
prestige throughout the East.

## Notes of the Day

## The Position in Egypt.

It is difficult to understand exactly the  
position which has been created in Egypt  
by the grant of independence following the  
deportation of Zaghlul; but we may at least  
be sure that the transformation of the  
Sultan of Egypt into the King of Egypt  
will not cause much delight to the Egyptian  
people, the mass of whom only joined the  
national movement because of their reli-  
gious grievance on the abolition of the  
Turkish suzerainty. The erection by En-  
gland without legal (i.e., the Khalif's sanc-  
tion) of the vice-regal throne to a Sultan-  
ate was regarded by them as a deadly in-  
sult, and the Viceroy as a traitor for sub-  
mitting to it. The title Malik (king) has  
never so far as we know been associated  
with Muslim Egypt, so that it may perhaps  
possess the charm at least of novelty. But  
we imagine that the Egyptians are more  
concerned with the fate of their beloved  
leaders—and especially Zaghlul—at present  
than with any machinations of their rulers.  
Zaghlul is an old man and he was very ill  
when he was deported. If he were to die  
in exile, it is difficult to picture the Egyp-  
tians as contented in their "independence."  
Thus "repression" always tends to create a  
new situation far more tense and dangerous  
than any which it sought to repress.

## "Pioneer's" Resentment.

The "Pioneer" of Allahabad appears to  
resent Mr. Raza Ali's protest in the Council  
of State against the mischief done by the  
interested correspondents of English papers.  
Those who are conversant with the methods  
and motives of these correspondents  
know full well that in no other country  
would such people be allowed to pursue  
their mischievous career unchecked. But  
here in India, where we have little else but  
a sham form of "responsible government",  
these things are tolerated—and we daresay  
even privately or publicly encouraged by  
some members of the bureaucracy,  
possessing as they do a narrow outlook, and  
actuated by an intensely conservative re-  
gard for their own "herd instinct." The  
latitude allowed to the correspondents of  
English papers becomes the more iniquitous  
when contrasted with the treatment meted  
out to the representatives of Nationalist  
journals, the head and front of whose  
crime consists in their refusal to compro-  
mise their consciences or sell their freedom  
of thought for a mere mess of pottage.  
The Indian correspondents are not only  
harrassed in many ways, but their tele-  
grams are liable to suppression at the will  
and pleasure of some undeducated  
minions of bureaucracy. The "Pioneer"  
may not care to remember how even mat-  
ter of fact cables addressed to independent  
newspapers like the "Daily Herald" are  
held up, simply because such cables survey  
news, not soothing to a self-complacent  
bureaucracy, while the agents of the Im-  
perialist Press in England are allowed the  
entire freedom of the cables to libel the  
Indian people and callously misrepresent  
the state of things in India. Were both  
sides allowed the same freedom, still it  
would not detract one whit from Mr. Raza  
Ali's complaint against the agents of the  
Capitalist press in England. Poor Mr.  
Sastri, who waxed indignant the other day  
about the iniquities of the Hearst Press  
America, perhaps conveniently forgot that  
there was such a scandal as the one com-  
plained of by Mr. Raza Ali, which deserved  
to be combated even more urgently than  
the calumnies, supposed or real, against  
British Rule indulged in by the Hearst  
Press. Or, it may be, because Mr. Sas-  
tri has now become "an imperial asset," (1)  
cannot realize the gravity of the offence  
committed by the correspondents of the  
English Press. However that may be,  
Allahabad journal has just cause to  
angry with Mr. Raza Ali, for, if his pro-  
were to lead to some restraint being  
on the mischievous activities of that  
famous class of persons, then much of  
sensationalism on which the die-hard  
thrives in England would disappear,  
even the doings of the bureaucracy in  
soon come to be viewed in their pro-  
light—which, would doubtless be a  
the Anglo-Indian die-hards in this  
Mr. Raza Ali's not trouble  
about any loss of his  
he may lose the  
and his head, he

## TREATMENT IN JAIL.

## AWAKENING.

TREATED AS COMMON PRISONER.

DEPRIVED FOR SOLITARY CONFINEMENT.

FOR NEWSPAPERS  
ALLOWED.AGOPALACHARIAR'S  
INTERVIEW.

Along with Mahatmaji, Agopalachariar was also in the cell. He is given the usual 2 jail blankets. He is curious to ask if he had any pillow. He said he had none. When I expressed surprise the Superintendent interposed that a pillow was a luxury. For Mahatmaji has the usual jail mug and dish. He is, however, allowed his own spoon.

## NO NEWSPAPER GIVEN.

Mahatmaji is given no newspapers. The Superintendent said that no books of his own would be allowed, not even purely religious books. Mahatmaji appears to have strongly remonstrated on this subject. The Superintendent said during our interview that if Mahatmaji applied, he would forward his petition to Government. He has not been deprived of his writing paper and pen, which he is just now using only to learn Urdu by himself.

Mahatmaji was in his usual single loin cloth. He did not seem to be in good health, though the jailer told us that he had gained in weight.

## TREATED AS A COMMON PRISONER.

It is clear that except in the matter of food to the limited extent mentioned by me, Mahatmaji is treated strictly as a common prisoner under the Bombay Jail Code, which, in many respects, is worse than the codes of other provinces. Of course, Mahatmaji told me that he did not want any complaints to be made about his life in jail. But the fine words uttered by the Judge at the famous trial at Ahmedabad had led us all to hope that the Government of Bombay would treat the great prisoner, if not exactly as he deserved or as we would want, at least as civilised Governments would treat their more important prisoners of war. Our interview, however, rudely awakened to the realities of British Indian administration.

and speculation produced a good deal of enthusiasm among the audience. Sjt. Dwarakanathji Gupta of Rajputana spoke enthusiastically on the resolution on charity. The speech of Sjt. Madanlalji Jalan of Bombay was very impressive. It dealt fully with the subject of evils in the present marriage system. Seth Hukumchandji spoke on the resolution of faith in which he frankly admitted the evils of the widespread vice. He more than once prayed to God to give him sufficient moral strength to conquer his weakness and announced that he would not allow his children after him to indulge in it. The proceedings of the day came to an end at 5 p.m. At night the Subjects committee held its sitting and Swami Shankaranand delivered a speech for about two hours on *Vaishya Dharma*. He reiterated all the resolutions passed in the day time by the Mahasabha. He very clearly pointed out all the evils and weaknesses of the Marwari community and showed them very ably the way of removing them. His speech produced a very deep and lasting effect on the minds of the audience.

RELIEF FOR SUFFERING  
MOPLAHS.M. ABDUL BARI'S APPEAL TO  
MUSLIMS.

(FROM OUR CORRESPONDENT.)

LUCKNOW, April 1.

Maulana Abdul Bari Sahib has issued the following statement:—  
"How the Moplahs are oppressed is not a secret. Besides learning through the Press, I also had a talk with Mrs. Naidu and was very much touched to learn from her, the miserable condition of women and children there. But I am glad to announce that the Jamiat-ul-Ulama in conjunction with the Khilafat Committee have taken it upon themselves to 'invoke' the sympathies of Muslims at large and to send a deputation composed of the members of both the associations to distribute relief among those who really deserve it. I would request the Muslims not to forget their neighbouring brethren in their hour of need. All bless them."

## NATIONAL WEEK.

EXTENDED BY ONE DAY.

18TH DAY OF EVERY MONTH  
—A DAY OF "SACRIFICE"MR. PATEL'S SUGGESTION TO  
WORKING COMMITTEE.

Mr. V. J. Patel, General Secretary, the Indian National Congress wired on Sunday evening the following message to the Working Committee members.

"With Hakimji's approval, circulating the following resolution among Working Committee members for urgent sanction. Committee recommends all people throughout India should observe eighteenth day every month as day sacrifice prayer so long as Mahatmaji is kept away from us, sacrifice to take form of setting apart, by every person, that day's actual income as contribution towards Tilak Swaraj Fund. Propose also another resolution. In view of representations from Madras, Bombay, thirteenth Hindu New Year Day in those provinces, Committee extends National Week one day, and calls upon country observe All-India 'Hartal' fourteenth, instead of thirteenth. Please wire. Votes reach on or before Wednesday."

## AHMEDABAD PROGRAMME.

VARIED AND COMPREHENSIVE.

(Associated Press.)

AHMEDABAD, April 1.

During the forth-coming National Week in Ahmedabad for three hours daily on the river bank in the evening there will be an incessant bonfire of foreign cloth. A series of speeches on the constructive programme of the work of the Congress from different platforms will be delivered and there will be national songs by women, concerts by musicians with various instruments, athletic sports by various associations, exhibition and sale of charka and Khaddar and playing of band by national volunteers. A large number of volunteers, it is said are being enlisted for this comprehensive programme.

## DUTY OF MUSLIMS.

## MR. CHOTANI'S APPEAL.

Seth M. M. H. Jan Mahomed Chotani writes to say:—

All provincial, district and subordinate Khilafat Committees are requested to cooperate whole heartedly with Congress to make the National week a success. Every Muslim is expected not only to join the Khilafat organisation but, also to join the Congress. The Khilafat and the Congress workers should cooperate in collection of the Tilak Swaraj Fund, enlistment of the Congress members and popularizing the use of Khaddar. The National week should be observed as directed by the Congress. Hartal on the 18th is to be voluntary and peaceful.

CHARKA KHADI PROCESSION IN  
POONA.

(FROM A CORRESPONDENT.)

POONA, March 25.

In response to Mahatmaji's advice to the whole country to take up the Khadi programme vigorously on his way to the prison a grand procession was arranged. It was really a unique way of homage to the leader, for his splendid services to the country. It was largely attended by Mohammedans, Parsis and Hindus, numbering over 2000. A batch of ladies, headed by Mrs. Anandibai Jogekar and Mrs. Indumabai Naik also attended the procession. A horse carriage was decorated with flowers, bundles of pure Khadi and Charkas were placed in it. The procession was taken from the Gandhi Maidan to the Reay Market through the Khilafat Committee Road, Ganesh Peth, Moti-Chank and Buchwar-Chank.

In the open grounds of the Reay Market, a huge mass meeting was arranged to deliver the message of Khadi under the presidency of Prof. S. M. Paranjpe. Mr. B. K. Damb referred to the trial of Lokamanya and the firing by the Police 14 years ago. He explained how the Khadi programme has touched the pocket of the Lancashire men and requested the audience to wear Khaddar. He was followed by Messrs. Gulam Dastagir, Layate Gokhale and Moulvi of Meerut. Dr. V. D. Phatak, dwelt on the unifying element in the charka which would bring all Indians under the common flag. Prof. Paranjpe, insisted upon the specific (non-violent) programme for attaining Swaraj. The president concluded with a speech in which he pointed out the efficacy of the charka. The meeting was attended by more than 5000 persons.

## SIR LIONEL DAVIDSON'S RETIREMENT

(Associated Press.)

MADRAS, March 31.

Sir Lionel Davidson, Senior Member of the Governor's Executive Council is leaving Madras to-day on retirement. Mr. A. R. Knapp who has been appointed as his successor resumed duties as Home Member this afternoon and his appointment as Special Commissioner for Malabar terminates from to-day. Mr. Knapp will, however, be in charge of Malabar affairs, notwithstanding his elevation to Executive Council as his experience and personal knowledge will be available in the reconstruction of Malabar.

## LANCASHIRE HOWL!

"NO FISCAL INDEPENDENCE  
FOR INDIA"LORD WINTERTON'S REPLY  
TO DEPUTATION

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

The official report of the cotton deputation of Lancashire Members of Parliament, which visited Lords Peel and Winterton on the 29th ultimo has been issued.

Sir John Randles, said that if Bombay cotton manufacturers had put undue pressure on the Government of India, they looked to the Secretary of State for India to hold the balance. Mr. Waddington said that the deputation was united on the necessity as far as was practicable of absolute Free Trade between Britain and India. Mr. Montagu's policy exceeded the terms of the Government of India Act, under which there was no suggestion of granting India fiscal autonomy. The deputation urged equalisation of import and excise duties at six per cent, to reduce the price of cotton goods by five per cent, enabling more goods to be produced in England and India.

"RAISE THE QUESTION IN COMMONS."

Lord Winterton in reply, said that ultimate financial responsibility under the Government of India Act rested with the Secretary of State for India, but the Government of India must have wide latitude in deciding the steps to be taken in particular instances. Sooner or later Parliament must decide whether or not to grant complete fiscal autonomy to India. He was unable to make any promise with regard to the alteration of duties in the next Indian Budget. He could only submit representations to Lord Peel, who must consult with the Government of India. Lord Winterton suggested that the question should be raised in the House of Commons.

## PRINCE'S TOUR IN INDIA

OFFICIAL FILMS EXHIBITED  
IN LONDON

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

The first series of official films of the Prince of Wales' tour in India and Burma, was shown privately in London yesterday. The series records the progress up to the time of departure from Gwalior. Altogether over 20,000 feet of film have been taken, but certain parts being unduly prolonged will be cut, so that ultimately 10,000 feet will be released for public exhibition.

## SIR WILLIAM MEYER'S WORK

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Sir William Meyer is taking over from the India Office a great deal more work including supervision of the Indian Civil Service and Forest Service, probationers after their first appointment and provision of passages for the civil officers of the Indian government.

## FRANCE AND GENOA CONFERENCE.

M. POINCARÉ'S STATEMENT IN  
CHAMBER.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Paris.—In the Chamber to-day Premier Poincaré stated that France would not permit any question associated with the Peace Treaty or Reparations to be raised at the Genoa Conference. He added that he was in no way surprised at the speech made by Dr. Rathenau and the communique issued at the conclusion of the Boulogne Conference was an anticipatory reply to it. As regards the decisions at the Washington Conference Premier Poincaré said he was satisfied with them from the point of view of the French Pacific possessions but nevertheless the Chamber would be asked to ratify the agreement which had its advantages.

ADVENT OF APRIL IN  
ENGLAND.VIOLENT SNOWSTORMS IN WEST AND  
WALES.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

April has opened with the most violent snowstorms of the year. The whole of England is affected but particularly the West and Wales. In some parts of Devonshire and Dorsetshire snow is lying six inches deep while in Monmouthshire it is two feet thick. After thirty hours incessant downfall sheep and lambs have been buried in drifts. Shortage of roots and hay makes the outlook for the stockowners serious. Many football matches have been cancelled. Trains to South Wales have been delayed for hours and telegraphs are interrupted. A number of collieries in South Wales have been rendered idle owing to the dislocation of railway transport. Tramway services at Cardiff, Swansea and Newport have been dislocated. There are four feet of snow in the streets of Swansea. Hurricane has been blowing in the Channel and lifeboats have been busy.

## THE NATIONAL WEEK

## HOW TO FULFIL MAHATMA'S INJUNCTIONS

SPREAD OF KHADI--THE WAY TO  
SALVATION.

## MARWADI VIDYALAYA MEETING.

At the Marwadi Vidyalya on Sunday night, a public meeting was held under the auspices of the Bombay Provincial Committee, when speeches were delivered on the National Week. Mrs. Sarojini Naidu presiding.

Mrs. Naidu said it was said Mr. Patel was popular because he made funny speeches. But the present was not a week for fun. It was a week for serious work and she hoped they would do their work with credit to themselves and this country.

## MR. PATEL'S SPEECH.

Friends, Before I speak on the National Week I should like to refer to one or two matters which in my opinion call for some observations.

## MAHATMAJI'S HEALTH.

Numerous inquiries have been addressed to me from almost all parts of India during the last few days regarding Mahatmaji's health and his treatment in jail, particularly as to the diet he is given and whether he is allowed books, newspapers and writing materials. I have also been asked to say whether or not facilities have been provided to meet Mahatmaji in jail. I am afraid, I am unable to answer the inquiries. I have no reasons to believe that Mahatmaji receives an ybetter treatment than that of an ordinary criminal of his class. Mahatmaji, it must be remembered, would never desire and we also should not expect any differential or special treatment for him. These inquiries, I regret to observe, betray a lack of understanding of the true significance of *Satyagraha*. As true *Satyagraha* we should not be anxious or curious to know these things, but should with greater determination carry forward the message of the great leader. We must remember that we are out to suffer and suffer cheerfully. We have no business to make a grievance or to grumble. Some friends are wondering why the Government of Bombay is not issuing from time to time press notes regarding all these matters to allay public anxiety. I need hardly say that such expectations from a Government who while admitting that Mahatma Gandhi is the most popular and revered leader give sanction for his prosecutions are foredoomed to failure.

## PANDIT MALAVIYAJI.

I am much grieved to notice day after day criticisms in the daily vernacular Press in Bombay of Panditji's speech the other day regarding a new Swaraj Scheme, a new League and a new Khaddar Fund. Perhaps you are all aware that in one of his subsequent speeches he distinctly told us that he had given up the idea of starting a new Fund. I have every hope that we shall not hear any more, at any rate from Panditji, about a new Scheme and a new League. I trust, therefore, that this chapter will now be treated as closed.

NATIONAL WEEK AND  
ORGANISATION.

The Ahmedabad Congress asked as to concentrate wherever possible on Civil Disobedience and suspend in the meantime all normal Congress activities to the extent necessary. It was believed that the time and arrived for trying our strength. We soon found out that we were mistaken. The requisite strength and discipline in our organisations were found lacking and the general non-violent atmosphere so essential to the successful prosecution of mass Civil Disobedience was not forthcoming. The Bardoli-Delhi resolutions were based on a full recognition of these drawbacks. The mass Civil Disobedience has been suspended and although provincial non-violence in respect of individual Civil Disobedience the Working Committee that recently met at Ahmedabad warns the Provinces against any hasty use of the powers so conceded. In fact the Provinces have in deference to the weighty advice of Mahatmaji suspended for the time being even individual Civil Disobedience both of an aggressive and of a defensive character. What is our duty under these circumstances? The National Week is before us. The Bardoli-Delhi resolutions have asked the nation to concentrate on the constructive programme laid down therein. The most important part of that programme in my opinion is that which relates to Congress organisations, Congress finances and to the greater production and spread of Khaddar. Virtually this programme is a continuation of the Bezwada programme of "men, money and munitions". The National Week last year saw the beginning of the Bezwada programme. Resolutions were passed between July and November of the last year by the Working Committee and the All-India Congress Committee calling upon the people to bring about a complete boycott of foreign cloth and to adopt the use of Khaddar to the exclusion of every kind of cloth as quickly as possible. It must be admitted that both in respect of the enrolment of members and the spread of Khaddar the high expectations entertained by Mahatmaji were not fully realised. The Congress workers all over the country were putting forth their

sudden circumstances beyond our control intervened with the result that we were in several Provinces called upon to start defensive Civil Disobedience. Thousands of our workers have answered this call and are suffering. All honour to them. There are some who feel that if we had continued the fight the success was ours. Mahatmaji and under his advice and guidance the Working Committee as also the All-India Congress Committee decided otherwise. We are asked to pause and concentrate on the constructive programme before we go forward again. I would therefore, appeal to all Congress organisations and Congress workers to devote this National Week to the prosecution of the following part of the programme.

## (1) ENROLLMENT OF MEMBERS.

Every person of the age 18 and over should be approached. The Congress creed should be fully explained to him. Our co-operation and moderate friends must be told that the only essential part of the creed is the attainment of Swaraj by all legitimate and peaceful means and not either Non-Cooperation or Civil Disobedience. The workers should remember that our object is to have a network of well disciplined, non-violent Congress organisations throughout the country. It must be also remembered that the enrolment of as large number of members as possible is not only necessary to carry on all Congress activities but will also be in its numbers the Nation's answer to the arrest and imprisonment of Mahatmaji.

## (2) TILAK SWARAJYA FUND.

The collection of donations for the Tilak Swarajya Fund which is the only Congress fund for carrying on all Congress activities must depend while the collection will go on even after the week is over. It is hoped that the beginning is made in that week. Unless the Nation's effort cannot achieve the great object set before itself. A study of the conditions already passed by the Working Committee and All-India Congress Committee from time to time would show how every local purpose can be served through this Fund and also how the Central Fund has been used for giving relief to local Congress finances. You will also see that in order to encourage the principle of provincial autonomy and for that purpose to make the Provinces financially independent the Working Committee has recently recommended that in future only 5 per cent of the Provincial collections should go to the Central Fund instead of the 25 per cent as in the past.

## (3) MAKING KHADDAR UNIVERSAL.

While we have made good progress in developing the Khaddar programme it must be admitted as I have already stated that we have not as yet fulfilled our Great Leader's expectations. Even as he went away from us the one word on his lips was Khaddar. His faith in the spinning-wheel as the one invincible weapon of non-violence that will purge us of our sin of untouchability, idleness and apathy to national affairs and that will also bring us prosperity, peace unity and freedom, was at its maximum when he cheerfully retired into prison leaving all the National affairs in our hands. Let us friends be true to his faith and see that every man and every woman who has faith in the Nation and affection for the Saint, wears Khaddar and Khaddar alone as the symbol of the Nation's determination to be free.

## (4) PRAYER, FAST AND HARTAL.

On the 6th of April, the *Satyagraha* day three years ago India resolved on spiritualisation of its politics and began her great struggle for emancipation on that basis. That day should be a day of prayer and fast. Men and women of every community should devote the day to self-purification and to offer humble prayers to God for help and support in our National struggle. The 13th of April should be observed in memory of the martyrs of the Jallianwalla Bagh who have by their blood united purified and strengthened the Nation. There should be a general fast, prayers and Hartal on that day. The Hartal should be absolutely voluntary and Congress volunteers should be responsible for preventing any breach of this essential condition.

Let us above all during the National Week contemplate within ourselves truth, non-violence and toleration, the three essentials for the success of our cause.

## GENERAL INSTRUCTIONS.

Requests have come from some Congress workers that I should issue special instructions for the conduct of work in the National Week. It is perhaps not possible to draw any hard and fast rules to be followed by the Congress workers and organisations in their work during the week but the following general instructions may serve as a useful guide to them.

## TO EVERY CONGRESS WORKER.

(1) He should visit a certain number of homes each day to explain and popularise the constructive programme.

## STRIKE IN U.S.

HALF A-MILLION MEN INVOLVED

## GOV'T OPTIMISM ABOUT NORMAL OUTPUT

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Indianapolis.—The miners' demand for increase of wages on the expiration of the current wage contracts is mainly responsible for the coal strike which begins to-day. Half a million trade unionist miners and a large number of non-unionist men are involved. The duration of stoppage is open to conjecture, since the accumulated stocks represent six weeks' supplies and with the approaching warm weather and lesser consumption, Government anticipate that the non-union men will produce fifty per cent. of the normal output.

Negotiators in anthracite fields are still endeavouring to fix a new scale, while as regards bituminous fields, the Secretary of Labour blames owners who repeatedly refused to confer with the workers.

## NO STRIKE IN KENTUCKY

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

New York.—Telegrams from various mining centres indicate that the men came out at midnight in accordance with the strike orders. Kentucky is the only field where work continues, the miners' contract remaining for another twelve months there. The Union has ordered 13,000 men at various places to remain at work on pumps.

## AFTERMATH OF RAND STRIKE

## SECOND READING OF INDEMNITY BILL

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Capetown.—In the course of the second reading of the Indemnity Bill, General Smuts attributed the revolution to the communists. Affecting ignorance of General Smuts' emphasis on workers and trade-unionists, he was sarcastically superseded by the different set of men of the military and revolutionary Junta. General Smuts' casualties as fifty killed and wounded on the Government side; 133 killed and 287 wounded on the revolutionary side; while Indians and natives suffered ninety-eight casualties.

## "SITARAM SAMPATRAO GAIKWAR."

## SENTENCED TO 6 MONTHS' HARD FOR ATTEMPT TO SELL COCAINE.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Sitaram Sampatrao Gaikwar, giving his address as Baroda, India, was sentenced at the Westminster Police Court to six months' hard labour, a fine of two hundred sterling and a confiscation of two pounds of cocaine found in his possession. Gaikwar who arrived in England yesterday was arrested on his arrival at Victoria Station. The detective testified he was introduced to the prisoner at a station buffet as a son of a chemist. After discussing whether he had got the stuff and can get any amount if I find market. I can let you have this for thirty pounds sterling for amount." Finally he agreed to sell the cocaine for 750 sterling. The detective arranged to meet him later, and when Gaikwar produced the cocaine he was arrested.

## BRITISH RUBBER OUTLOOK.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Referring to the failure hitherto to arrange the control of rubber output, "The Times" suggests rivalry between Malaya and the Dutch East Indies may have delayed the action. The paper advocates a conference, in London, of the parties concerned, and says the delay is fraught with serious danger to the British rubber industry.

## SIR P. SYNES RESIGNS.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

Frederick Sykes has resigned the post of Controller General of Civil Aviation, as he considers that the Department has been so reduced for reasons of economy as to render the post inappropriate. He offers his unpaid services in connection with the contemplated reorganisation of the Ministry.

## ROYAL VISIT TO BELGIUM

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

Majesties will pay a State visit to King and Queen of Belgium on May 10, when the King will visit as many cemeteries of British

## FIRST AFGHAN ENVOY IN LONDON.

## BRITISH MUSLIMS PRESENT ADDRESS.

## HIS EXCELLENCY'S REPLY.

The members of the British Muslim Society organised a social gathering on the 13th of March last in the Shahjahan Mosque, Woking, London, to meet and present an address of welcome to His Excellency Sardar Abdul Hadi Khan, the Minister Plenipotentiary and Envoy Extraordinary of H. I. M. the Amir of Afghanistan to the Court of St. James's. It was a successful and important gathering in as much as it was marked by the presence of personalities—statesmen and politicians of different Muslim countries of the world and last but not least the opportune time in which it happened to be held when the Muslims of different parts of the world were in sore need of closer associations, mutual exchange of ideas and expression of sympathy and goodwill. Besides the members of the Society there were present several important and influential personages of different Muslim countries amongst whom H. E. Muss Kazim Pasha El. Hussaini, head of the Palestine delegation, Hon. Mrs. Chatterton and Khalid Sheldrak were prominent.

The English Muslims took the opportunity on this occasion to express their views on the Khilafat Question and declare their unity with Muslims of the World. Lord Hendley, the English Muslim Peer read out the address of welcome which was gold-printed in beautiful parchment paper and which read as follows.

## THE ADDRESS.

"YOUR EXCELLENCY—We, the members of the British Muslim Society, desire to extend to your Excellency sincere and fraternal welcome on your arrival in our country.

Your Excellency's appointment as the first Afghan Minister accredited to the Court of St. James's, not only marks the assumption by Afghanistan of the rightful place which her sagacity, patience and indomitable valour have won for her among the nations of the World, but seems, also, to us, to herald the dawning of a new era of mutual co-operation, understanding and goodwill between Islam and Christendom.

It is our earnest prayer that, in the light of that new era, the difficulties that to-day are harassing Islam and the Khilafat may be speedily dispersed, in the only manner acceptable to Muslims of every race; and that the integrity of the Turkish Empire, with the authority of H.I.M. the Sultan as Khalif and Guardian of the Holy Places, may be fully re-established and maintained. We pray that it may not yet be too late to undo much of the mischief that has been wrought by the blunders of the past few years, and are one with, as we honestly believe, the vast majority of our countrymen in rendering the misguided action of Great Britain (in whose Empire Muslims outnumber Christians) in lending support—moral or otherwise—to Greece against Islam, with bare justice—apart from policy—forbids it.

We here constantly of the anti-Christian feeling that is said to prevail among Muslims, but, in actual experience have met with no sign or trace of its existence. On the other hand, indications of anti-Muslim feelings among Christians are plentiful—even in the utterances of statesmen—and it is such prejudice, unthinking and based on ignorance, that is responsible for a public opinion that is too often mistaken and misled.

The Muslim Mission in England has, since its inception, done much to remove this prejudice and to spread the truth—to place the true doctrines of Islam in their purity and beauty before the minds of thinking men and women; and, though the work be, of necessity, slow, it is, perhaps for that reason, thorough. We, many of whom owe to the Mission our conversion to Islam and the revelation of that light which illumines reason and faith alike can testify to the value and extent of the work that has been accomplished; and to our own feeling of undying personal gratitude to the large-mindedness, unselfishness and zeal which have inspired and carried on its activities, we are bound to add our sense of the service it is rendering to the cause of the true religion, in spreading, by precept and example, the Islamic spirit of tolerance, sympathy and goodwill. We also take this opportunity of expressing our deep gratitude to Her Highness the Begum of Bhopal, to the manifold munificence of whose Muslim State we owe the beautiful Mosque in this Country.

It is for Muslims the world over to emulate each as Allah has enabled him—the example set by the Mission in England; and we pray that Afghanistan, in the person of your Excellency, may not hesitate to avail herself of the unique occasion that is now before her of representing the true spirit of Islam in the Councils of the World.

We remain, Your Excellency's sincere Brethren in Islam.

## THE MEMBERS OF THE BRITISH MUSLIM SOCIETY.

## HIS EXCELLENCY'S REPLY.

His Excellency made a fitting reply in Persian, the English translation of which was read by Mr. Habibullah Lovegrove. In the course of his reply His Excellency

heartily for the cordial welcome you have so kindly extended to me, in the name of the British Muslim Society, as your brother in Islam. I am also much impressed with the feeling for the genuine fraternal sentiments concerning the Muslim Power of Afghanistan, to which you have given expression in your address.

I quite realise the significance of the call of the Holy Quran to the People of the Book; to which you have so pertinently referred in your address. The call aims at the establishment of cordial relations between the Islamic and the Christian worlds. This is, to my mind, the one principle that affords a common meeting-ground, to bring about a community of thought and feeling between the two great influences of the world. Hence, I believe, that this should be the watchword of every ambassador from Muslim countries to Christian nations.

I hold that a true conception of religion is the sole means of removing international or inter-racial difficulties, and establishing true peace in the world.

It is my deep-rooted conviction that Islam is the one religion that can bind different peoples together in the bond of affection such as exists between brother and brother. The history of Islam teems with striking instances of such fraternization of discordant elements in human society; and to this the Holy Qur'an refers, when it says:—"And hold fast by the covenant of Allah all together and be not dissuaded and remember the favour of Allah on you when you were enemies, then. He united your hearts so by His favour you became brother."

It is a matter of deep satisfaction to me to know that our English brethren also share the political creed of the rest of the Islamic world. I am impressed to find that your hearts, at one with the Afghan, the Indian, the Turk, the Arab, the Egyptian, the Moor, the Javanese and the Tartar, are also throbbing with the same universal sentiment on the vital question of the Khilafat and its present defenders. If the Islamic and the Christian worlds are really anxious to secure abiding peace, let them seek it through better mutual understanding. It is necessary, in the interest of a lasting peace, that they should respect one another's religious susceptibilities, not interfering with the sacred institutions of one another, but showing all veneration to their shrines. In a word, they should make it a point to refrain from anything that may tend to injure the other's cherished sentiments. Such a fair dealing must inevitably lead to an appreciation of one another's cult and the promotion of mutual goodwill and amity.

I can not conclude without expressing my deep appreciation of the services of the workers of the Muslim Mission to the cause of Islam. I need hardly say that with the noble ideas and pure sentiments that inspire their efforts, its ultimate success is a foregone conclusion. It is a matter of special pleasure to me to have met to-day those whose hearts are alive with such pure emotions. It is a spiritual delight to me to see before me the hearts and eyes that, perceiving the light of Truth had the courage of conviction to accept it and to find in it their true felicity and mental satisfaction. For all this we must feel grateful to the Almighty Allah and humbly implore Him to enable us to do our utmost in the promotion of this cause with which I am sure, is bound up the reformation of the world.

In the end, I offer you once more my heartfelt gratitude for your kindness.

Their Excellencies entertained to luncheon at the house of the head of the working Mission, Khwaja Kamaluddin B.A., L.L.B.

## THE NATIONAL WEEK.

(Continued from Previous Page.)

(2) He should enroll a certain number of members of each day.

(3) He should explain fully the Congress creed to those whom he approaches for enrollment.

(4) He should collect a certain amount for the Tilak Swaraj Fund each day and in doing so he should under no circumstances receive any donation without first passing a proper receipt therefor.

(5) He should be responsible for inducing at least one home each day to introduce a spinning wheel.

(6) He should personally hawk Khaddar and induce a certain number of persons each day to discard the use of foreign cloth and take to Khaddar.

I have a word to say to the Congress Committees. They should take special care to see that at public meetings organised by them during the National Week, services of volunteers who have not accepted the Congress pledge in its entirety should not under any circumstances be utilised. I now close, but before I sit down, may I refer to one very important matter I have in mind? Mahatmaji was removed from us on the 14th of March. In consultation with my colleague Mr. Rajagopalchari I have ventured to suggest to the President that the 14th day of every month should be observed throughout the country as a day of sacrifice and prayer so long as Mahatmaji is kept away from us, the sacrifice to take the form of setting apart by every person of his income on that day as a contribution to the All-India Tilak Memorial Swaraj Fund. I have no doubt that this suggestion will find favour with the Working Committee and be acceptable to the country.

## MR. KHADILKER.

Mr. K. F. Khadilker said: "The Mahatma's last message to his people was Khaddar and if they all adopted Khaddar Swaraj would come to them without any effort. This National week was observed on account of the Rowlett Act, but while they were doing their duty to the country, the Rowlett Act had disappeared like a thief in the night. In some way Swaraj would come to them without their knowing it, only if they used Khaddar. But they must do their work with earnestness and patriotism. By using Khaddar they would improve the economic condition of the cultivators and they would help the country."

Swaraj. Even the Calcutta Bar Association had passed a resolution advocating the use of Khaddar as far as possible. The words "as far as possible" did not mean much. If they wanted to do their work sincerely they must sign the Ahmedabad Congress pledge and follow it implicitly Khaddar would be given to those who wanted to sell it as a sort of duty to their country and arrangements had accordingly been made both by the District and Provincial secretaries.

## PRESIDENT'S SPEECH.

Mrs. Naidu said they had been told by the previous speakers what their duty was during the coming week and how they could successfully contribute to the National week. Only the other day, Mr. Pickthall, who had just returned from England, had told her that he attended a meeting where the great magnates of Lancashire were also present and they were very much terrified at the Khaddi movement and among other things they suggested that if Indians were somehow given Swaraj, India might give up the boycott of foreign goods. It seemed that even to those who ridiculed our movement the Mahatma had been vindicated in his far-seeing passion and sympathy for the poor. Therefore if we had any reverence for the most revered of our Indian leaders in the words of Sir William Vincent, if we had one breath of fidelity towards him, if we had one breath of loyalty towards our country, we should give every ounce of energy, and force within us to spread this gospel of Khaddi. What did it mean? Some woman had told her that in Khaddi she looked like a "bedspread" and another that she looked like a "sponge". But whether she looked like a "bedspread" or like a "sponge", it did not matter, so long as she did not look like a slave. (Cheers). For the use of foreign clothes was the pledge of slavery. (Applause). It was a proud privilege to walk naked and free than to have the finest stuffs they could have as a sin of their bondage, of their slavery. (Cheers). Therefore, we must use all our efforts to win over persons to the use of Khaddi both in our family and outside of it. It was a wonderful sight to see the procession of pilgrims going to the jail where the Mahatma was imprisoned. To each woman Mahatma said: "Sister work your Khaddi". That was the last message of Mahatma Gandhi to his people. That was his message three years ago. As a previous speaker had said they had been convinced by that association with the Mahatma. Just that day he had been talking to a mill-owner, who had made his millions out of the mill industry, and he had told her that the greatest work that Gandhiji had done was to create a demand for hand-spun clothes and that he was going to use for his own people.

She wanted to give them the message of the Mahatma to the people. His message was that by sacrifice and by suffering they would be free. The suffering was long drawn and would go on from week to week, but their work during the coming week was a symbol of suffering and sacrifice. She asked them to keep the Ramnavami fast, as that National Week commenced speaking of Ramraj, not of the old pattern, but according to our modern needs and modern vision and to satisfy the modern ideas of freedom. When they were gathered together in greater numbers let us go in a spirit of consecration, ready to do the nation's bidding throughout the whole week. But let them not end their labours with the Hartal which was likely to be changed from the 13th to 14th. Let us prove to the world that what we were doing during the week was an earnest of what we would do when we won Swaraj, whether we won it in one year or six years. Mahatma Gandhi was writing the history of Satyagraha and we must see that that he added to the appendix that the Satyagraha week following his imprisonment was indeed the grandest that any human mind could conceive of. There was no need for more speeches, for speeches only meant that they had failed in their duty towards the people. She would tell them a fresh message of Mahatma Gandhi. He said that in one simple message that he wrote from his prison of Sabarmati, that the people of Bombay should make the Moderate and the Englishman but at ease. To some it sounded as an anti-climax of all his efforts but to her it appeared to be the very crown of his message. When they were in their struggle for freedom in their struggle against injustice and inequalities, nevertheless they in their mission could see the great vision and conception and the ideal of liberty that would break down the system of tyranny and they had room for the tyrant and his sycophant. "Let it be recorded in the history of India that by our example of tolerance, love, and charity, we have drawn into our folds those who stand against us to-day concluded Mrs. Naidu.

## ALL-INDIA WEATHER.

(Associated Press.)

SIMLA, April 2.

Disturbed conditions in Northwest India have given local rain and snow in Northwest Baluchistan and on the hills from the Northwest Frontier Province to Almorah, with a few falls in North Punjab plains and North Rajputana. They are less marked to-day. Rain has fallen locally also in Assam.

The chief amounts are Sibsagar, Tezpur, Sibsagar, Murree half an inch Rawalpindi; quarter; Sonmarg; one; Madras, Fort Sandeman, Chaman a quarter. Forecast:—Decrease in Baluchistan.

## BELGIAN PRINCE ENGAGED TO ITALIAN PRINCESS

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 1.

Belgium.—The "Sole" states that the engagement between Prince Leopold of Belgium and Princess Yolanda of Italy will be officially announced on the occasion of the forthcoming visit of the King and Queen of Italy to Belgium.

## IRISH BILL.

## ROYAL ASSENT GIVEN.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

Royal Assent has been given to the Irish Treaty Bill after amendments were adjusted between the two Houses.

## "PROSPECTS FAIRER THAN EVER."

MR. CHAMBERLAIN SANGUINE.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, Mar. 31.

Mr. Chamberlain, speaking at Birmingham, said he rejoiced at the Irish agreement and thought the prospects fairer than they had ever been. He was sanguine that he might yet see a contented Ireland and, within his lifetime, a united Ireland. Government, added Mr. Chamberlain, did not regard the Geneva Conference as a panacea for all ills but as a useful and necessary step in the progress of the world's recovery.

## ULSTER'S ASSURANCE OF CO-OPERATION

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, March 31.

In the House of Commons, Captain Charles Craig gave his assurance that the Ulster Government would do everything possible to co-operate with the Provisional Government to restore peace.

## IRISH REPUBLICAN ARMY.

## A TEST OF LOYALTY.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, Mar. 31.

With a view to ascertaining the real position in the Irish Republican Army, the General Headquarters have issued a proclamation requesting loyal officers and men to report before to-morrow evening.

## BOYCOTT OF BELFAST.

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, Mar. 31.

Mr. Desmond Fitzgerald, the Irish Free State Minister of Publicity, announces that at the request of the Catholics of Belfast, boycott of Belfast will be removed.

## E. I. RV. STRIKE.

## FRACAS AT ASANSOL.

(Associated Press.)

CALCUTTA, April 1.

According to a communique issued to-day by the Agent of the East Indian Railway, approximately a further two hundred strikers resumed yesterday, mainly in the coal districts. At Asansol itself, there were over fifty resummptions.

Another fracas occurred this morning at Asansol, the strikers attacking some loyal workers. The mob did not disperse until the troops appeared on the scene. There was no firing on the night of the 30th. A cowan men of carriage and wagon department were attacked on the platform at Asansol. In the Communique, it is further stated that so far only a very few strikers have been asked to vacate their quarters at Asansol, and strikers generally are still living in their quarters. In every case, in which dismissed men have been served with notices to vacate the quarters, their accounts have first been settled and their full dues have been made available.

## A PREVENTIVE MEASURE.

(Associated Press.)

CALCUTTA, April 1.

In connection with rioting by the East Indian Railway strikers at Asansol about half a dozen soldiers are deputed to travel by each up and down mail and parcel express trains to guard the engine crews and guards.

## INDIA'S DEBTS TO ENGLAND.

## WILL IMPERIAL GOVT. ASSUME RESPONSIBILITY?

(REUTERS' TELEGRAM.)

LONDON, April 2.

To-day's "Observer" ascribes the rally in the prices of Indian stocks since the middle of March to the belief prevalent in the financial circles that the Imperial Government will definitely back the next Indian loan issue. The paper says the question whether the Imperial Government will assume the responsibility for India's debts to England is more important in view of the powers now sought to raise the maximum of fifty million sterling here. The nervousness with regard to the political conditions in India, remarks the "Observer," has to some extent subsided, but it cannot be said that public confidence is sufficiently restored to ensure any striking success for the loan secured only on revenues of the Indian Government.

## U. P. COUNCIL PROROGUED.

(Associated Press.)

LUCKNOW, April 1.

The U. P. Council was prorogued to-day sine die. A resolution of Pandit Iqbal Narain Gurtu recommending the release of prisoners whose convictions were considered irregular by Mr. D. R. Lytle, the Special officer, was negatived by 25 votes against 24. Sir Lytle saying in all 22 cases we considered the conviction by Mr. Lytle and them 16 and 6 are being released.

God. (Chorus).  
who wanted to  
try, but he asked  
and examine them  
wanting reject  
there were a  
be followed by  
want political ad-  
leaders who were  
ared to resist in-  
would never go  
were convinced that  
Their leaders  
whatever its cost.  
their forces; their aim  
maximum of results  
of efforts wasted.  
at our aim. But  
to the battle, let  
sh, whatever might  
the cost we must  
might either win  
in the hands of God.  
was our, or defeat,  
unflinchingly, boldly  
our eyes to the goal,  
the Mahatma burning  
flame of our loyalty  
society. (Loud cheers).

MANJI.

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

face with the most  
existence and how  
it. They had to  
maji's instructions to  
near in mind the life  
fearful odds. They  
the words that "be  
of the trial. Those  
distributed broadcast so  
encouraged how to live  
tmaji invited the  
head. There was  
where the accused  
secuting Counsel was  
and not over-stating  
had said to the  
breath away when he  
stating the case. I  
such a trial for all  
were Indians dis-  
ch Gandhi had left  
of many leader  
to go to do  
to act? They had  
biji's instructions  
bit that there was  
resolution brought  
Association meeting  
cotting foreign goods  
felt that Indian  
which Mahatmaji  
he did not blame the  
and allowed sufficient  
second the resolu-  
find any. Was  
their duty by the  
kind of struggle  
country, if that  
they were doing  
time for them to  
once. Let us not  
ce and of follow-  
proved ourselves  
and the cause which  
had better story  
than witness  
agreed with the  
not follow every  
before them. He  
"untouchable"  
ed in so doing  
people who would  
to fight against  
let us approach  
for the good of the  
lives. Let us also  
and the gospel and  
try in the coming  
true to the great  
the jail for our

They had been treated  
mobbing and encourag-  
eris in the national  
was both in-  
ing.

## REMITTANCES TO ANGORA. FURTHER INSTALMENT.

The Hon. General Secretary, Khilafat office writes to say:—  
It was already announced in the Press that the intimation regarding the delivery of first two instalments of £20,000 and £80,000 to Ghazi Mustafa Kemal Pasha, Angora was received in this office. It is now hereby announced for public information that further remittances of £5,000 and £5,000 have also reached their proper destination.

Agent of the Netherland Bank, Bombay writes to Seth Chotani as follows:—Dear Sir, I beg to inform you having received by this mail a letter from my Amsterdam Head Office in which they inform me that they have received advice from the Imperial Ottoman Bank, London that your remittance dated 4th and 8th February for £4,000 and £5,000 respectively in favour of Ghazi Mustafa Kemal Pasha, Angora have been paid of which please take note. Yours faithfully Agents Netherland Trading, Society Bombay (Branch).

## SIR HENRY WHEELER'S APPOINTMENT PRESS COMMENTS

(ASSOCIATED PRESS.)  
PATNA, April 1.

Sir Henry Wheeler, Governor designate Bihar and Orissa, will arrive here on Saturday 8th April.

Commenting on appointment of Sir Henry Wheeler, the "Express" congratulates him on his well deserved honour.

The "Searchlight" hopes he will bring to bear on his work sympathy and determination to help the province in its intense striving for the status of a unit of a self-governing country. The people of Bihar during Sir Wheeler's absence from this province have undergone complete transformation in their outlook and ideas.

The "Bihar Herald" describes him as one of those forceful administrators who make their presence felt. Sir Henry Wheeler is said to detect sham. The paper assures the new Governor that he will find plenty of new character to cleanse his province of his here and will need all his strength of pet aversion.

## MUNITIONS BOARD CASE. TWO ACCUSED DISCHARGED.

(ASSOCIATED PRESS.)  
CALCUTTA, April 1.

At the Police Court to-day, on the application of the Advocate General, the case against two of the accused in the third Munitions Board Case, namely H. L. Stringer, Storekeeper of Narauldanga Depot and A. F. Saldana, Contractor, were withdrawn and the Chief Presidency Magistrate directed their discharge. In this case here remains only one accused Mr. Waite, Deputy Controller, who will be placed on trial after the case against Billingshurst Blockburn, stordart and Michael now being tried was over.

## LONDON INDIAN STUDENTS. SHARING THE NATION'S SUFFERINGS.

(FROM A CORRESPONDENT.)  
LONDON, March 12.

Mahatma Gandhi's arrest was confrmed here late in the evening of the 10th March, and in response to the great popular demand for a meeting of the Indian students in London to express their sense of grief and their participation in the sufferings of the Nation, a meeting was held at the Indian Students' Union and Hostel on Saturday, the 11th. After an appeal from the Chair at the outset to those assembled not to do or speak anything that Mahatma Gandhi would not wish for or approve of, and to show no ill feeling or hatred, even so much by a word, resolutions were passed to observe a complete fast and to hold two meetings for prayer, wherein all should join, on Sunday the 12th. It was also resolved to collect contributions for the Nialk Swaraj Fund during the next week. A Committee of eight, representing various parts of India, was appointed to draft and send a cable to India, and to consider the advisability of organizing a public demonstration. The Committee, which met immediately after the meeting, sent the following cable to the All-Indian Congress Committee:—"London Indian Students share Nation's sufferings." As to the demonstration, it was decided, in view of the fact that a similar organization was being considered by the London Indian Association on a much bigger scale, that no separate demonstration should be undertaken.

Sunday, the 12th was a day of complete mourning. The lounge of the Shakespeare Hut, which is very much alive, active, and full of merriment on every Sunday, though crowded to-day, was pervaded all day by a strange calmness and unuttered grief. Everyone moved and spoke quietly, almost in whispers. The restaurant, a big, mooning, buzzing rendezvous, was almost completely deserted. A meeting was held for prayers at mid-day. Collection for the fund was carried on all afternoon.

In accordance with Mahatma's advice the usual programme of the evening was not interrupted, and the evening lecture and discussion took place as usual, with the exception of the concert programme. Instead a meeting of the Indian men and women in London, and of several European friends, was held, prayers were offered in 2nd, Sanskrit, English, etc. By Parness, Mahatmahan, Hindus, and Christians, and the proceedings terminated with the singing of "Vande Mataram". The scene was the most impressive in any Indian's memory.

## MAHATMA GANDHI. KEPT IN YERAVDA JAIL.

### RECORDING EXPERIENCES.

(ASSOCIATED PRESS.)  
AHMEDABAD, April 1.

Mr. Gandhi is engaged in recording his thoughts and experiences in the Yeravda Jail. He has taken no books with him for study.

## "WAGING WAR." MR. MAHOMAD HAJI'S STATEMENT.

CHARGES, FRAMES.  
(FROM OUR CORRESPONDENT.)  
CALCUTTA, April 1.

The hearing of the case of waging war against Mahomed Hajee, Secretary of the Khilafat Committee, Tirur, was resumed yesterday by Mr. E. Narayana Iyer, I.C.S., Special Judge. Witness Parameswara Iyer, an unlicensed Vakil of Tirur, who was cross-examined by Mr. Nugent Grant, stated that on the night previous to the out-break of the rebellion, accused had convened a meeting and arranged to send messengers, who were Khilafat Volunteers, with letters on bicycles to all Khilafat offices to collect men to loot public offices and to take possession of Tirur but he had not actually seen it.

The village Munsiff of Tirur stated that the accused had organised a petrol system after the rebellion and that in spite of patrolling by Khilafat volunteers, there was no trouble of any kind at Tirur after the 21st August last. He also stated that he had not threatened P. W. to give evidence against the accused.

THE STATEMENT.  
After cross-examination of prosecution witnesses, the accused put in the following written statement:—

I deny that I am guilty of waging war against the King or of any other offence in connection with late rebellion in Malabar. I say that the police with the help of my enemies have intentionally distorted the truth in order to bring about my downfall, because I was actively interested in the Khilafat movement. In their efforts to secure my conviction, they have intentionally omitted to call persons of unquestionable respectability who are in a position, by reason of their presence at Tirur on the day of occurrence, to speak to the part I played in quelling that aspect of rebellion, which took place in Tirur on the 21st August last. Those persons were Mr. Deolittas, Mr. Manjeri Rama Iyer, and two Privates of the Leinters. Far from being a rebel and taking part as such in the attack upon railway line and combining offices at Tirur, these persons could tell the Court that I did everything in my power and influence to allay the fury of the mob and the fact that I saved the lives of police and the three Europeans above mentioned, who were hemmed in in combined offices at Tirur at the risk of my own safety. I further say that I did everything I could to restore order and prevent lawlessness, both at Tirur and Ponnani, and while I was Secretary of the Khilafat movement at Tirur, I deny that I ever advocated doctrines attributed to me of compassing the overthrow of British Government and substitution of a Khilafat Government, or in any way encouraged or countenanced violence as a means of redressing the grievances connected with the Turkish policy.

The Court then framed a charge against the accused under Section 121A.I.P.C., and posted the case for defence evidence to the 24th April.

## NON-CO-OPERATORS IN PRISON. STATISTICS FOR ASSAM.

(ASSOCIATED PRESS.)  
CALCUTTA, April 1.

At the Assam Legislative Council replying to a number of questions regarding imprisonment of the non-cooperators, the Government member said that 497 non-cooperators were imprisoned in the province from 24th November, 1921, to 31st January, 1922, the district figures being Cachar 8, Sylhet 12, Goalpara 50, Kamrup 119, Darrang 46, Nagaon 117, Sibsagar 107, and Lakhimpur 25. Eighty persons have been imprisoned for offences committed in connection with picketing, sales of excisable articles and foreign goods, 47 of these orders of imprisonment were passed as an outcome of complaints lodged by private buyers or sellers and 33 on police reports. Government have information of the following convictions of non-cooperators for using actual violence up to 2nd of January. Goalpara 8, Kamrup 41, Darrang 17, Sibsagar 10.

## CHAURI CHAURA TRIAL. 3 WITNESSES EXAMINED.

(ASSOCIATED PRESS.)  
GORAKHPUR, April 1.

In the "Chauri Chaura" Case to-day Jagat Narain was the first witness examined. He described the volunteer organisation and their activities from Wednesday, the 1st February.

Next witness, Anwar Dhoi, narrated how Constable No. 1 was killed. He was hidden in the house of one Gobardhan Halwai, whence the volunteers dragged him out and killed him near the Railway crossing gate. The last witness was Indarjee Narain. He described as to how the Constable No. 1's wife and two children were treated by the rioters. He could not see the

## MULSHI SATYAGRAHA. MR. BHUSKUTE SENTENCED.

(FROM A CORRESPONDENT.)  
POONA, April 1.

Mulshi Satyagraha Case in which Mr. Bhuskute and others were prosecuted the Tata Company was decided to-day by Mr. Naik, Sub-Divisional Magistrate.

Prosecution against four was already withdrawn and they were discharged. Out of the remaining, one died during the trial. Mr. Bhuskute and three others were sentenced to six months simple imprisonment and Rs. 50 fine in default six months simple imprisonment. The rest nine were fined Rs. 50 each and bound over for a period of six months to keep peace. Mr. Bhuskute and others went to jail cheerfully asking all to keep the struggle going on and to save Mulehi.

POONA, April 1.  
Judgment was given in the Mulshi Satyagraha case by Mr. Naik, Sub-Divisional Magistrate. Messrs. Bhuskute, Deshpande, Sathe, Bhavanya Mahal were sentenced to six months simple imprisonment and Rs. 50 fine in default six months simple imprisonment. The remaining ten were fined Rs. 50 each and were bound over for six months. Notices under section 144 I. P. C. are also served to-day on Messrs. Sumant, Deva and Thundare and 19 others to abstain from obstructing the work of Tata Company at Mulehi. Great excitement prevails in the city and Mulehi.

## POLITICAL PRISONERS IN AGRA JAIL

### ALLEGED HARSH TREATMENT

(FROM A CORRESPONDENT.)  
AGRA, April 1.

Mr. Kedarnath who was recently released was rearrested to-day. The Town Congress Committee has organised constructive work concentrating all efforts on Khaddar sale. Some prisoners released to-day from the Central jail, report instances of harsh treatment meted out to political prisoners there. Mr. Nurmohammad Nilam and others are reported to have been punished severely by jail officials on 31st March for shouting "Gandhiji-ki-jai." Mr. Nurmohammad is said to have lost four teeth and to have received serious injuries. The officials' attitude is most condemnable.

## AMERICAN FRIENDSHIP FOR GERMANY.

### RENEWAL OF ANCIENT TIES OF RESPECT.

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

New York.—Prior to leaving for Berlin, Mr. Alanson Houghton, the new American Ambassador to Germany, said that he hoped to renew the ancient ties of respect and mutual service between the United States and Germany. America could not be contented as a nation, so long as her own fellow-citizens of German ancestry were embittered by a sense of injustice. The War was ended, declared Mr. Houghton, the loser must foot the bill, but the causes of the apportionment of blame were matters which he, for one, would no longer discuss. He considered that European civilisation at least would perish unless a practical reconciliation was worked out in Europe in a similar way to the dying-out hatred between the North and the South United States.

## BRITISH REVENUE RETURNS. RECORD RETURN FROM INCOME TAX

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

Further details of revenue returns show that expenditure amounted to £1,079,000,000 sterling, thus showing a surplus of £40,000,000 compared with the estimated surplus of £177,000,000, the bulk of which, it was anticipated, would have been available for debt redemption; whereas, while the floating debt has been reduced by £246,000,000, this has been accomplished mainly by fresh borrowing. The most conspicuous feature of the returns is the achievement of the income tax payer, who has produced £399,000,000 sterling, compared with the estimated £410,000,000. Nevertheless, he has created a record. Another striking revelation is that since longer licensing hours have been introduced, the consumption of drink has steadily declined.

## FALL IN BRITISH REVENUE

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, March 31.

The revenue for the financial year ending 31st March amounts to:—  
£1,125,000,000 sterling, as compared with £1,428,000,000 sterling of last year. The decrease is chiefly due to the drop of £189,000,000 sterling in Excess Profits Duty and £117,000,000 sterling in special receipts.

## RUMANIAN VILLAGERS' FIGHT WITH WOLVES

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

London.—A grim story of Rumanian villagers' encounter with a pack of hungry wolves comes from Vienna. The animals entered the village of Piestroft and killed five children. The peasants armed only with pitchforks and clubs tried to drive the

## MR. MONTAGU'S RESIGNATION.

### UNITY AT THIS JUNCTURE.

## IN A PROGRESSIVE NATION'S RESOLUTIONS.

(ASSOCIATED PRESS.)

The following resolutions have been passed at the Council of the Indian Progressive Federation regarding Mr. Montagu's resignation:—

The Council of the Bombay Progressive Association places on record its profound regret at the resignation by the Right Hon. E. S. Montagu of the office of Secretary of State for India and gives expression to its sense of high appreciation of the very valuable and epoch-making services rendered by him to the cause of this country during his tenure of office as Secretary since 1917. While deploring the circumstances that forced his resignation, the Council hopes that it will not involve any change in the liberal policy of Constitutional Reform in India deliberately adopted by Parliament.

(2) The Council is emphatically of opinion that to his great enthusiasm for establishing and maintaining the principle of Liberty and Equality in the governance of India, his singular earnestness of purpose and his genuine liberalism, are largely due the famous Montagu-Chelmsford Joint Report and the Reform Act of 1919, halting though it is.

(3) Whilst the Council is unable to endorse all the measures of Mr. Montagu's regime, and in particular his currency and exchange policy, and regrets his inability to control the rising tide of expenditure in India, both Military and Civil, and to give adequate relief in the matter of the Punjab wrong, it recognises the fact that he had to make his way amidst great difficulties and to work out his programme of Reform in a Coalition Parliament in which the Tory element predominated. The Council is, however, convinced that India will for ever be grateful to Mr. Montagu and the Cabinet of which he was a member, for giving her a place in the League of Nations and in the Imperial Cabinet, and will gratefully remember that his genuine liberalism was chiefly instrumental in securing the acceptance of the principle of equal rights for the Indian subjects of His Majesty, by His Majesty's Government and the Imperial Cabinet, and by most of the Self-governing Dominions of the Empire.

(4) The Council records with satisfaction Mr. Montagu's insistence on the right of India to publicly represent her wishes to His Imperial Majesty's Government on the question of the Treaty of Sevres and has heard with commendation that his resignation was due to the publication under his authority of the latest cablegram of the Government of India on the subject. This Council is emphatically of opinion that it was absolutely necessary to publish the cablegram in India in the interest of the peace and tranquillity of the country. It is deplorable that what was so obviously a step of sagacious statesmanship, should have appeared a matter of such an aberration on the part of Mr. Montagu as to demand his resignation.

(5) The Council hopes however, that the Government of India's Khilafat cablegram, embodying the solid views of the entire body of the Governments of Madras, Bombay, Bengal, United Provinces, Punjab, Bihar and Orissa, the Central Provinces and Assam, including their Ministers, and the Frontier Administrations, responsible for peace and tranquillity of India, and the considered views of the Government of India itself, and reflecting the unanimous opinion not only of the Mahomedans but also of the entire community of India, will receive at the hands of His Majesty's Government the weight to which it is entitled; and hopes that the assurance of the Prime Minister to that effect will be realised.

(6) The Council is convinced that Mr. Montagu's resignation at this critical juncture is in the nature of a calamity, and trust that even though out of office he will continue to serve the cause of India as hitherto.

## STEAMER 'JAPAN' ON FIRE.

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, March 31.

Hongkong.—The six thousand ton British India steamer 'Japan' caught fire at Kowloon wharf. The foreholds were flooded in order to save the vessel and the cargo was damaged by water. Salvage operations are being begun.

## NEW FORCE FOR PALESTINE.

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, March 31.

A gendarmerie totalling 730 officers and men, in command of Colonel McNeill, will sail for Palestine next week. The new force is very mobile and is equipped with motor cars.

## DESTRUCTIVE FIRE

(REUTERS' TELEGRAM.)  
LONDON, April 1.

Key West.—A great fire broke out at Nassau, capital of West Indies, today, burning millions of dollars' worth of property. Vessels have left here for S. O. S. call.

Key West.—A great fire broke out at Nassau, capital of West Indies, today, burning millions of dollars' worth of property. Vessels have left here for S. O. S. call.

**FURNITURE.**  
On Hire, Hire-Purchase and For Sale.  
ADAM SAJAN & Co.  
Cabinet Makers, House Furnishers, Drapers  
Contractors, etc.  
CALCUTTA & BOMBAY.  
Head Office: 7, Bow Bazar Street.  
Tele. Address: "Fairland."  
Branch: 35A, Nagdevi Street, Bombay.  
"Statutory," BOMBAY.

### Wonderful Astrologer

Mr. Rupachandra, B. A., Hindu Ashram,  
Lahore, writes on 10-10-12: "The perusal of  
"THE HEAVENS UNVEILED" has well  
repaid me."  
The wonderful book "The Heavens Unveiled"  
enable you to know your future for ten  
years, your longevity methods of prolonging  
longevity to read the full Annual Life Reading  
and Character Reading of everybody, etc.  
It also contains God Sri's method of telling  
future events without horoscopes or date of  
birth. Price Rs. 2. The Premier Astrological  
Bureau, Chodavaram, Vizag. District.

**BLUNT RAZORS**  
Resharpened bright and keen  
as New. As. 8 each. New  
handles fitted Rs. 1-0-0 each.  
Kropp Razors Rs. 4-8. Wilkin-  
son Crown and W. Razor Rs. 4-8.  
All above Post Free. New Raz-  
ors, Safety and Ordinary Blades, etc., stocked.  
Surgical Instruments Repaired.  
**MATHEWS & Co.,** 28 Madras Street, 10  
Crossing BOMBAY.

### H. N. MISTRY & Co.,

Always large stock on hand of  
White Carura Marble Tiles and Slabs  
Real Belgium Black Marble Tiles  
and Colour  
English White Glazed Tiles and  
Flooring Tiles, etc.

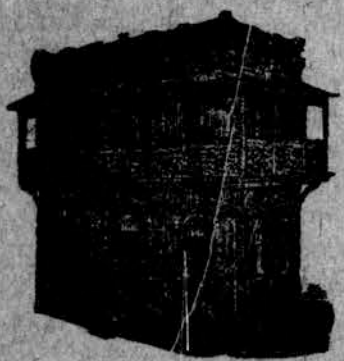
Old Custom House Road,  
Circle, BOMBAY.  
Tel. Add. SATBANG. Tele. No. 741.

### Fresh Stock

Huntly and Palmers Biscuits,  
Cadbury's Chocolates, rovi-  
sions, wines, Spirits, etc.  
Prices on application.

### PHILLIPS & Co. LTD.,

21 Hornby Road,  
BOMBAY



A part of the  
**Atank Nigrah Pharmacy**  
Which sends post free on being asked  
a book "Fun for Leisure Hours"  
Head Office: JAMNAGAR (Kathiawar)

### COTTON FEATURES

worked out by Astr. logy and supplied  
either daily, weekly or monthly, on a  
moderate charge.

### HUNDREDS GAINED

with our forecast.  
ONCE TRIED, EVER TRIED  
write to:—  
**B. H. GANOO,**  
375, Hornby Road, Fort, BOMBAY.

### RARE OPPORTUNITY.

FOR  
PHILOLOGISTS, PRAKRITISTS  
LINGUISTS AND STUDENTS.

### CONCENTRATED ARDHA DICTIONARY.

Shani Mani Shri  
Chandrabai  
A dictionary explaining  
Megdhi words in  
Hindi and English.  
List all Prakrit words  
with Sanskrit citations and  
occurrences in Ardha  
Mahabharata. In four volumes.  
Specimen on application.  
GANDARI,  
G. India.

### TO BACTERIOLOGISTS AND SURGEONS.

We have just received for sale, Micro-  
scope with oil immersion. High pressure  
steriliser. Incubators, gas and electric,  
beakers, test tubes, Ampoules, and glass-  
ware for laboratory fittings, Hypodermic  
syringes, all glass and Record available.  
Please apply for further particulars.  
S. N. GUNDI, Bombay, No. 4.  
Telephone: No. 2411.  
Telegrams: "GUNDISAN."

### THE NAPIER ENGINEERING COMPANY.

OFFICE WORKS AND FOUNDRY  
BYCULLA.

CONSTRUCTIONAL AND GENERAL ENGI-  
NEERS, SHIP BUILDERS, Repairers, Boiler  
Founders, MANUFACTURERS OF  
CUTTING PRESSSES and MILL MACHINERY  
Oxyacetylene cutting and welding Brasses  
Launches and Boat Builders.  
Tele. No. 143. Telegram: H/soprer

### FORT-REVIVER. ITAL HEALTH-GIVING BEVERAGE.



DELICIOUS  
&  
NON-ALCOHOLIC.  
Made from the juices  
of choicest selected fruits,  
by scientific process.

It is a sure preventive  
against Malaria, Influenza  
and Chills.

This nerve tonic is high-  
ly recommended by  
Doctors.

Can be had of all  
Druggists and Stores.

SOLE AGENTS:—  
**NOWROJI ARDASEER & SONS.**  
Cowaji Patel Street, Fort.

Your Grey & White Hair  
will turn **JET BLACK**  
TRY AT ONCE

### Somal Hair Dye



STOCKED BY CHEMISTS & DRUGGISTS  
—Agents Wanted—  
**Somal Company,**  
8 Dept. P.O. Box 830, BOMBAY.

### AMRUTANJAN

Is the last word in the cure for aches  
and pains. 25 years of increasing sales  
prove this fact. Amrutnan is the  
only Indian pain balm used in millions  
of homes. It certainly.

### CURES ALL

aches, pain, swelling sprain, stiff joint  
cold, cough, cuts, bruises, chilblains  
rheumatism, backache and a host of  
other pain troubles. Costs 10 Annas  
Sold Everywhere.

It kills and cures all **ACHES and PAIN**  
GANDHI CALENDAR 4 As.

### Keep your Eye

from any trouble Cataract, Glaucoma, Itchy  
Corneal Ulcer, Redness, etc., by our **LEVEN**  
**SON'S** REMEDY of nature. 1 drop  
Rs. 2-3, 3 drops Rs. 4, Postage Rs. 1. Ask  
for free particulars to  
**NEW FORMULA CO.,**  
Bombay.

### ANDHERI SADHAKASHRAM.

#### FIRST ANNUAL REPORT.

In the course of his report of the work of  
the Sadhakashram, Andheri, for the period  
February 1921—December 1921, Mr. K. G.  
Deshpande, Acharya, says:—This Institu-  
tion was originally started with the object  
of providing training to those non-co-operat-  
ing college students who wanted to devote  
their life for the service of villagers. Later  
on promising young men who had lower  
educational qualifications but who had an  
equally strong desire for service in villages  
were admitted. The course originally ad-  
opted was as follows:—

(i) Religious instruction and spiritual  
training, (ii) the art of spinning and weav-  
ing, (iii) a practical course in agriculture,  
(iv) Indian economics and Politics, (v)  
Hindustani, (vi) Music, and (vii) Physical  
culture.

The Ashrama was started on the 9th of  
February 1921, with 26 students coming out  
of Arts, Medical and Engineering Colleges  
and representing almost all nationalities in  
India. But the majority of students be-  
longed to Deccan and Gujarat. During  
the term there were 20 more additions.

The first batch was especially fine in  
body, intellect and spirit. They went  
through a somewhat rapid course of train-  
ing with great enthusiasm. All of them  
had attained proficiency in spinning and  
some in weaving. Two of them had taken  
to agriculture and the rest had sufficient in-  
sight to help them to study agricultural  
problems in villages. A few of them knew  
Hindi already while the rest made fairly  
good progress. Lectures in Politics and  
economics with special reference to Indian  
conditions, regular trips to surrounding  
villages gave them some idea of their future  
work. The spiritual training consisted  
chiefly in impressing on their mind the cen-  
tral principle that the non-co-operation  
movement is essentially a movement of self-  
purification and all practical problems of  
life must see their solution in spiritual  
development.

This batch of students participated in  
carrying out the Beowade programme via  
the collection of the Tilak Swarajya Fund,  
enlisting of Congress members and the  
spread of spinning wheels and conducting  
of spinning classes.

The Second Quarter.—The admissions to  
the Ashrama during this period were 12.  
The new Sadhaks were taught spinning and  
weaving. We had five looms working, and  
also had the advantage of a regular teacher  
in weaving. Owing to Mahatmaji's insis-  
tence, that all energy should be concentrated  
on spinning and weaving the training in  
other branches was subordinated to the  
former branches. Besides the Sadhaks, we  
took 6 outsiders to be trained in this art.

The Third Quarter.—We had 15 admis-  
sions. Unfortunately they came to the  
Ashrama just when malaria established  
firm sway over our locality. We tried to  
get on as best as we could in spite of the  
severe attack of this enervating disease.  
Many Sadhaks were sent home. Those who  
remained had the courage to pull on had to be  
referred to the hospital. On the whole we passed  
very anxious days. The work was practi-  
cally at a standstill.

Fourth Quarter.—We had ten admissions  
during this term. We recovered from the  
shock after about a month's stay in Bom-  
bay. During this period we did not remain  
idle. Weaving was practised in Mr.  
Belgaumwalla's factory and the loom set  
up by the Girgaum Congress Committee;  
assisted Mr. Gulzarilal in his Charkha pro-  
paganda and did such jobs as were assigned  
to us by the Provincial Congress Com-  
mittee.

Besides the general work done by the  
Sadhaks, as above referred to, they were  
engaged in village organisation, Congress  
organisation, Ashram management, spinning  
classes and other Congress propaganda in  
towns and in conducting schools and general  
work of agitation.

The month of November was taken up  
by recuperation. In December the Ashrama  
revived its activities and is now showing  
its own self again.

We now give an analysis of the total ad-  
missions which number 83.

|                                         |    |
|-----------------------------------------|----|
| Those that are in the Ashrama including | 30 |
| those on leave                          | 15 |
| Those that are working outside          | 15 |
| Those who have kept connections with    | 22 |
| the Ashrama                             | 14 |
| Those who have left the Ashrama         | 4  |
| The dead                                | 1  |
| Total                                   | 83 |

The Ashrama derived great benefit from  
the visits of distinguished persons.  
Mahatmaji's visit set them thinking ear-  
nestly for a whole week. So also the visits  
of Lala Lajpatrai and Shriji Girdharilal  
Lalji. Besides these the following ladies  
and gentlemen paid visits to the Ashrama:—  
Messrs. Jammal Bajaj, V. J. Patel,  
Umar Sobani, Mrs. Naidu, Sarkis Devi  
Chaudharani, Atia Begum, Prof. Vijaypur-  
kar, Acharya Gidwani Lalubhai Samal-  
das. Many other well-wishers have taken  
the trouble to visit the Ashrama and given  
valuable suggestions. As it will fill  
many lines to give their names we take this  
opportunity to render our grateful thank  
to each and every one of them.

### GOUR MAHASABHA

(FROM A CORRESPONDENT.)

The Secretary, Reception Committee,  
Gour Mahasabha, wires from Brindaban  
under date April 1:—

"The Gour Mahasabha holds its 25th ses-  
sion at sacred Brindaban from 14th to 16th  
April. Ample accommodation has been  
provided for ladies also, who will hold a  
separate meeting. All are cordially in-  
vited to help in the uplifting of the com-  
munity and thus of the country."

Towards the end of the month, Messrs.  
Constable hope to publish Colonel Roping-  
ton's second diary under the title "After  
the war." Beginning immediately after  
the Peace Conference the narrative, after  
recording the author's impressions in most  
of the European capitals affected by the  
war, ends with an account of the Weaving  
Conference, which he attended.

Mrs. Katherine Mansfield has scored a  
success with "The Garden Party" and other

### REPRESSION IN TAMIL NADU

#### CONGRESS PROPAGANDA.

The following fortnightly report of Con-  
gress work in Tamil Nadu from 11-3-22 to  
25-3-22 has been sent to the General Sec-  
retary, All-India Congress Committee, Arya-  
bhawan, Sandhurst Road, Bombay:—  
After Mahatma Gandhi's arrest cir-  
culars were sent to all districts calling  
them to arrange for regular bonfire of  
foreign clothes. The following are the  
important centres where bonfires of foreign  
clothes took place.

Madras, Trichinopoly, Erode, Madurai,  
Tanjore, Salem, Tirunelveli, Coimbatore,  
Tiruppur, Kumbakonam and South Arcot.  
I have also to mention that at various  
places the bonfires took place twice or  
even thrice.

#### REPRESSION.

Trichinopoly.—Three volunteers were  
sentenced to 6 months R. I. under Section  
188, I. P. C. for picketing. Mr. Krishna-  
murthy was arrested under Section 107  
and was sentenced to 1 year prison for re-  
fusing to furnish security. Orders under  
Section 144 were served on the following  
persons:—Messrs. C. Rajagopalachari,  
General Secretary, Indian National Con-  
gress, E. V. Ramasamy Naicker, General  
Secretary Tamil Nadu Congress, K. V.  
Subramaniam, and T. V. B. Sastri, Trichy  
District Secretary.

Madurai.—Mr. Umar Pulavar and Shan-  
suddin Sahab were sentenced to three  
months R. I. for picketing against orders  
under Section 144.

Orders under Section 144, were served  
on Muthukamatchi Mudaliar, Atmaram  
Swami and Pichai Pillai for one week in  
connection with attack sales at Melur.  
Similar orders (General) for 24 hours issued  
against 12 persons and the public, prohib-  
iting them from approaching within  
half a mile of the Taluk office.

Messrs. Sundaraja Ayyangar, Meenakshi  
Sundaram, Hussain Malik Khan and  
Mutalif Maricar were sentenced three  
months, the second only to two months R.  
I. for disobeying the order under Section  
144.

The above four were sentenced also to 9  
months except the second who was sen-  
tenced to 6 months R. I. for offences under  
rioting unlawful assembly and etc.

Sattur.—Orders under Section 144 were  
served on Messrs. E. V. Ramasamy Naic-  
ker and K. V. Subramaniam, prohibiting  
them from speaking.

#### SWADESHI

Tinnevely.—1,250 lbs. of yarn sold. 2,000  
lbs. of yarn is the weekly out-turn.

Madurai.—Dhaddar sold Rs. 230; spinning  
wheels sold at 18.

Erode.—Khaddar brought from villages  
for Rs. 1,500 Kaddar sold at the office Rs.  
1,000.

Trichinopoly.—Kaddar sold at office Rs.  
1,000.

After Mahatma Gandhi's arrest there is  
a great rush for pure Kaddar. As reports  
are yet due from the district offices, de-  
tails of the sale, and, etc., will be sent to  
you in our next report.

25th March.—Messrs. Shaik Abdul Khad-  
dar Shaik Muhammad, Khawaja Mohideen  
and Thimma Reddi, who underwent six  
weeks rigorous imprisonment for picketing,  
were released to-day after the expiry of the  
period.

#### VOLUNTEERS.

Total number of volunteers according to  
the revised list is 769. Volunteers in  
Madurai, Trichy and Erode do picketing.  
In Madurai, Trichy, Erode and Madurai they  
go about selling Kaddar and enrolling  
members for the Congress "Hindu."

#### REPRESSION IN MADURAI.

Madurai, March 24.—Four national vol-  
unteers Srijuta Sundaraja Iyengar, Meen-  
akshisundaram, Mohamed Musthali Sa-  
hib and Kasim Maracair took trial before  
Mr. S. Kulu Nair, Sub-Divisional Magis-  
trate, Melur on the 18th under Section 188  
on a charge of having disobeyed an 144  
order issued by the Sub-Magistrate of Melur  
on the 17th March—the day fixed for the  
resales of attack shops in Melur taluk—  
prohibiting them from remaining within a  
radius of four furlongs all round the Melur  
taluk Cutchery. The accused offered no  
defence. The Magistrate found all the  
four accused guilty and convicted the  
first three accused to two months' rigorous  
imprisonment each and the fourth accused  
to three months' rigorous imprisonment.  
After this conviction, the four patriots were  
produced on the same day before Mr. Ahme-  
Katharbatcha Sahib, Sub-Divisional Magis-  
trate, Madurai for trial under Sections 143  
and 145 I. P. C. and the Magistrate deliv-  
ered judgment on the 20th March convicting  
the 1st, 2nd and 4th accused (Sundara-  
ja Iyengar, Mohamed Musthali Sahib and  
Kasim Maracair) to nine months' R. I. each  
and the 2nd accused Meenakshisundaram  
to 6 months' R. I. Four others—Hannan-  
to 6 months' R. I., Yusuf, Shamsud, and Mohideen  
Pacha—who were also produced before Mr.  
Ahmad Katharbatcha Sahib, Sub-Divisional  
Magistrate, Madurai, for trial on the 18th  
March under Sections 143 and 145 I. P. C.  
tendered an unconditional apology and un-  
dertaking in view of which they were dis-  
charged by the Magistrate on the 20th. A  
second batch of four volunteers—Srijuta  
Somuservai, Abdul Kabeem, Umappulavar,  
and Shamshudin were arrested by the Melur  
Police and placed on trial under Section  
188 I. P. C. on the same charge, before  
Mr. S. Kulu Nair, Sub-Divisional Magis-  
trate, Melur, on the 20th and they too  
neither cross-examined any prosecution  
witnesses nor offered defence. The Magis-  
trate convicted the 1st accused Somuservai  
to four months' R. I. and the rest—Abdul  
Kabeem, Umappulavar, and Shamshudin to  
three months' R. I. each—"Hindu."

A public meeting of the citizens of  
Banosa and Babbli was held at Banosa  
district, Amratoli, on March 31st, to pro-  
test against Government permitting the  
location of a liquor shop on the high road  
near the railway station and the factory  
area, as a liquor shop at the place will  
prove a source of temptation to factory  
hands, railway passengers and school child-  
ren and cause degradation to the community.

HONEY  
CIGARE

M. FR

KAPD  
Will do ever  
ACCESSORIES A

Fre  
Febri

SAMPLER  
Sta

Telegrams  
"DEMAN"

THEFT BY

INCIDENT

"Skyline" writes:  
"An ex-soldier by 219 Down got  
when he came in  
Office and robbed a  
White whiskey van.  
He then stepped  
opened the case for  
the whole job and  
Nandgon. He  
guards' Rest E.  
his spree. When  
puri that he was  
galore, the police  
to the police station  
Black and White  
searching his  
it and the bra-  
whiskey. He was  
drunk, a cold  
robbed him a  
On the 25th  
Magistrate at  
a man with  
only one day's  
fine of Rs. 60.  
The fine was  
guards subse-  
practically giv-  
feeding the re-  
day's sample of  
Court. The

## Literature and Art.

INDIA'S COMING  
REVOLUTION.THE OPPRESSION OF THE POOR.  
By C. F. Andrews, (Ganesh & Co.,  
Madras.

"The oppression of the Poor", which appropriately forms the title of a new volume by that well known friend of India, Mr. C. F. Andrews, is by no means misleading. Those who have been at pains to go deep down into the lower strata of life in India have long felt considerably dissatisfied with the existing state of things. Mr. Andrews has not chosen the title haphazard. His intimate knowledge and long experience of Indian life have convinced him that there is something rotten to the core in the present, day state of things, which only "a system of Government which is aloof from the people", can afford to ignore. Mr. Andrews feels that "the revolution through which India is passing is not ultimately political", but "far down below the turmoil on the surface lies this age-long problem of the suffering of the poor". The book is in effect a protest against the relentless "industrial system of sweated labour, which has tended to destroy domestic life, to blight childhood, to create centres of immorality and drunkenness, and thus to form a new Indian population saturated with all the vices of the slums of the industrial West," and also against "the systems of 'Forced Labour' of each and every kind, which still exist in terrible and relentless power in almost every province of British India and in the Indian States". Nor does Mr. Andrews overlook that terrible curse of untouchability, which goes back to those earliest centuries, when the colour bar was drawn against anyone whose skin was not of the same pur as that of the conqueror, and he, therefore, pleads rightly that this course of untouchability "must first be removed, if India is ever truly to be free." Nor is he alone in this plea for the poor and the oppressed. It will be remembered how Mahatma Gandhi and the Indian National Congress have made the question one of the main planks in national work. The result of Mahatma's insistence and his own example have already produced a change of outlook among the people, which is truly wonderful.

Mr. Andrews tells the story of that ghastly tragedy at Chanderpur in Eastern Bengal, which was perpetrated by the Gurkha soldiers at midnight on the unsuspecting Assam refugees. "No valid excuse can be put forward for this action," Mr. Andrews says, and yet Sir Henry Wheeler, who has just lately been appointed Governor of Bihar, felt no qualms of conscience in defending the essential inhumanity of the Gurkha outrage.

In utter contrast to the irresponsible, and even callous behaviour of officialdom was the action of the people themselves. "At the sight of the persecuted and oppressed refugees thus left shelterless and destitute, at the sight of the wounds which weak women and children had received on their bodies, the towns people of Chanderpur, quick in sympathy and pity, took them at once that very night as their own guest. It was an act of tenderness that should never be forgotten. . . . they never thought for a single moment of the danger, of the risk of cholera infection. They accepted these refugees as their own, and gave them all they had with lavish hospitality." "The nobility shown, during those days of stress and strain, by all classes of the community", including the doctors, the National and other volunteers, the railway and steamship employees and dock labourers, has by no means been exaggerated. Regardless of risks and sufferings to themselves, all these laboured day and night in the service of destitute humanity, in a manner that is worthy of admiration. It is a comment on the methods of Government that the National Volunteers who were capable of the highest degree of self-sacrifice and self-effacement have been proclaimed illegal under the Criminal Law Amendment Act and Medical Officers like Dr. Suresh Banerji who did not spare themselves in those days, together with a large proportion of those selfless volunteers are to-day in prison for political offences!

Compare and contrast with the noble behaviour of Chanderpur people, the conduct of the Bengal Government. "My indictment" of the Bengal Government, in the name of humanity is this," Mr. Andrews, says "that they have oppressed the poor where pity was needed; they have employed violence, where tenderness was required; they have brought down their Gurkha soldiers whose human nature itself was calling aloud for sympathy and compassion; they have forfeited the good name of a humane Government. And what is an added injury, when this brutal outrage has been committed, they have called in their Director of Public Information to justify to the public through the columns of the daily press."

The incidents connected with the exodus of "coolies" from the Assam tea-plantations and the deadlock at Chanderpur are not likely to be forgotten easily. The moral of it all is this, that the Government in this country has, by its actions come "more and more to side with the rich, with the powerful, with the vested interests, with the capitalists, why the poor, in their misery, have looked to the banner of Mahatma Gandhi, who is himself the poorest of the poor, and who understands his own poor people." And, also, the people, as a whole, have been learning "to honour and to serve the poor and the oppressed," and in a sense, the evil has brought out the essential nobility

and good nature of the people. One thing, however, we cannot forget and it is this that "the misery caused by the sense of oppression is the greatest driving force of our own age. It is driving the multitudes of India to revolution". To repeat what was said at the outset, "the revolution through which India is passing is not ultimately political. Far down below the turmoil on the surface lies this age long problem of the suffering of the poor". To say that Mr. Andrews has done a woman's service to the cause of India's poor would be superfluous, the more so in view of the fact that he has dedicated his life in the service of humanity and has adopted India as his Motherland.

## THE LOKAMANYA

Lokamanya Bal Gangadhar Tilak, being a short life of Mr. Tilak with essays on Mr. Tilak's career by Mr. N. C. Kelkar. Published by the Sarasa-Vangmaya-Pracharak Mandal, Bombay.

This instructive little collection in Marathi of all the laudatory references to Mr. Tilak's career and political achievement which were published at the time of his death and during the critical period in the history of Indian agitation which followed, is the 35th volume in the series which the enterprising firm of Mr. T. N. Pangal is bringing out to interest the rapidly growing Marathi reading public. To be expected to pay rupee one and annas eight for a volume of this type is rather too much for the average Marathi reader, but to him Mr. Pangal offers a tempting bait. To the subscribers to this series, which we suppose means, the regular clients of Mr. Pangal and to the members of the Indian National Congress, the Congress Sabhasadas—as the Marathi has it—the pleasure and privilege of buying this volume can be secured at half the price. So we combine business with political education.

Sir Narayan Chandavarkar did not fail to pay a discriminating tribute to the greatest political fighter against the Indian bureaucratic system the day after his death. On the 2nd of August, 1920 he wrote: "We all feel the loss as national. He has died fighting disease as bravely as he fought for his country courageously. He has made his mark in history." This little bunch of essays opens with this tribute and the essays that follow being the major part of them from the incisive pen of Mr. Kelkar, his devoted lieutenant for many years—are full of interesting matter, shrewd political analysis and a host of quotations from Mr. Tilak's speeches, particularly during the period from 1916 to 1919 when Mr. Tilak travelled all over Northern and Central India to expose the hollowness of the official contention that India had already received a substantial measure of selfgovernment. The volume has become additionally interesting with the inclusion in it of a synopsis with dates of Mr. Tilak's life a mention of some interesting anecdotes in that wonderful career. We hope the present volume will find eager and sympathetic translators in other Indian languages.

## MARATHI STAGE.

## GANDHI TOPI OR THE GANDHI CAP

The drama is written by Mr. S. N. Tadpatrikar. It was staged at Nagpur by the Lokmanya Dramatic Company on Christmas eve last year. It has been written, the author tells us in the preface, to show how the Gandhi cap which symbolises the non-co-operation movement fits the Maratha wearer.

Vasant, the hero of the piece is a student in the M.B.E.S. Class. Without being made acquainted with the mental processes of his mind during the days of tension which followed the Nagpur Congress, we are introduced to him as a full-fledged non-co-operator, who turns his back on his college at the call of the country. The drama would certainly have been the richer if the conflict in the hero's mind, before he crossed the Rubicon had been clearly portrayed. Vasant must have been more than human if he never thought of his M.B.E.S. degree, never thought of balancing utilities, never tried to deceive his conscience by special pleading. But it is not difficult to imagine why he took the right step. Youth wants to live dangerously; more, it has always before it the three visions of love, patriotism and religion. Being convinced that non-co-operation was the only remedy to break his country's fetters, he did not want an exception to be made in his case, he did not want to play the shirker. Further, as he tells us later on, he valued knowledge which he had already got and not a degree which did not raise one's height even by a centimetre.

His sister Venu is also a non-co-operator. She is a teacher in the National Girls' School. Their elder brother Trimbak, a Government servant is a typical Maratha gentleman. Be patriots by all means, he advises them, but why these extreme steps? Did Lokamanya Tilak ever ask students to leave their schools and colleges? Again the author is right in giving prominence to the Maratha mind has been often honestly troubled as to why Mahatma should have made a fetish (according to them) of boycotting colleges and law courts which the Lokmanya never felt the necessity of this step in his patriotic work. The Maratha is too hard-thinking to appreciate the fact that sentiment plays a large part in the affairs of men. What more natural than that the people of India should be fain to extend voluntary co-operation to a Government which has yet to apologise for the crawling order and has not yet to right

the Khilafat wrongs? The Maratha politicians, and all those who replace sentiment by cold calculations, are bound to read in the non-co-operation programme a Chinese puzzle.

The remark as to the absence of development of character in the hero, applies also to other characters in the drama and considerably detracts from its merit. The heroine Lila, is the daughter of a non-co-operating pleader, who in his moments of weakness runs having suspended practice. It is quite natural that with Lila to encourage him, Vasant—threw him. If heart and soul into the non-co-operation movement and went picketing liquor shops. We are not told, however, how Lila entered into his life, what each admired in the other. In bringing Lila and Vasant together, the dramatist has overlooked, perhaps because he could not help it, that the rigidity of Hindu society does not admit of free intercourse between the sexes, however dignified, however above reproach it may be. But the inexorable law of Karma, which bridges distance and brings lovers together, from the remotest corners of the world, works even in such society through certain makeshifts.

The climax is reached when the picket Vasant is arrested on the charge of interfering with the liberty of a citizen to get drunk. Lila's father goes to the Court to save him from the clutches of law, though he has suspended practice. Vasant, in the spirit of a true non-co-operator, and that spirit is by no means wanting in Maharashtra, spurns legal assistance but is acquitted, thanks to the admission of the villain's dupe that he had trumped up a charge against Vasant. Then suddenly comes the anti-climax. The hero and the heroine vow that they will not get married till Swaraj is won.

There is little humour in the composition. However, with all its defects of technique the drama is good in parts and gives, on the whole, a faithful picture of the working of the Maratha mind, so far as the non-co-operation movement is concerned.

## FOR INVESTORS.

Guide-Book for Investors in the Government of India Securities.

This little brochure is an attempt of the Government of India to popularise their securities with the Indian investor. It would be unreasonable to expect in this hand-book any appreciation of the real economic significance of this debt, and the pressure of its charge upon the Indian public. We would not, therefore, condemn the book merely because it omits to inform the reader that the total debt of 561 crores on the 31st March, 1921, since increased by about 80 crores or a total of nearly 650 crores, is a burden on a people whose total annual national income is not even 1,000 crores, and from whom a net revenue of over 200 crores has to be raised to secure and support the debt charge. We would not condemn it because it withholds the information—or does not make it pointed enough—that for the last four years the ordinary revenue, in spite of repeated additions to taxation, has failed to meet the ordinary expenditure; and that without a radical orientation of policy in this regard there is no prospect of any equilibrium in the near future. We would not condemn it merely because it fails to enlighten the would-be investor that while all Indian loans, unless specially exempted, are liable to the Indian income and super taxes, the sterling debt of the Government of India is held to be exempt from such taxation. It is not the aim of this book to afford such insight into the mysteries of Indian financing, and so we can only consider and praise its descriptive chapters detailing the form and variety of the securities, the mode of investment, and the means of getting the interest. There are useful appendices on the conversion and transfer of loans, as well as on rules regarding investment through the Post Office, and the issue of duplicates for lost securities. We cannot do better than commend it to the far-sighted securities who want to combine safety with a certain yield, only sounding a note of warning against the risks of depreciation, which the pamphlet under review has conveniently omitted to discuss.

## SOCIAL AMITY

Modern Indian Etiquette by Syed Fakhruddin Aboobakar El Edroos, B.A., of the Bombay Provincial Civil Service.

Let us be just to the author of this entertaining work and quote even at the risk of trespassing upon valuable space the full title of the volume. He calls it "Modern Indian Etiquette, of mixed society, describing ancient social usages and important modern Indian manners and customs aiming at social amity between Indians and non-Indians." Mr. Edroos dedicates his work "to the Peace-Loving Civilised Brotherhood of the World!" We cannot imagine that the world or even the civilised brotherhood portion of it will feel interested in the problem of how a young official new to India should behave towards the Indians or get excited over the author's lament that "although in recent years Clubs have developed to increase social amenities between Europeans and Indians and are patronised by high officials, barriers arise which prevent each from feeling quite at home with the other." Mr. Edroos, however, has hopes that these barriers will soon crumble down and the united wall of friendliness will replace them. It is all a question of misunderstanding the etiquette of each other according to Mr. Edroos and we are given to understand that such mis-understanding can be "readily remedied by a close study of the customs and manners of Indians as are described in this booklet and by experience of their feelings and susceptibilities."

Mr. Edroos evidently has had interesting readers of his manuscript. He thanks "two well known oriental scholars Mr. C. N. Seddon, I.C.S., and Mr. Otto Rothfeld, I.C.S., for the kind interest they have taken in his work." We are not exactly aware of the oriental scholarships of these two gentlemen, but if the interest they have taken in this volume becomes infectious and their cousins in the other services as also their business cousins in India were to look in at the various suggestions of Mr. Edroos and remember them, when on

Glaxo lays for Baby  
a firm foundation of  
sturdy health

A suitable form of milk is the only food for a baby up to 9 months, and Glaxo is pure cow's milk made safe and suitable for Baby by the Glaxo Process. It contains NO starch, NO flour, NO malt.

Glaxo is a complete food for Baby, and is prepared by the addition of boiling water only. Your Baby not only gets from Glaxo all he needs to make him healthy, happy and strong, but is safeguarded against the dangers inseparable from your local milk supply.

Glaxo

## "Builds Bonnie Babies"

A Doctor says: "Glaxo is not only perfect from a scientific and clinical point of view, but it is so easily prepared that even in the hands of the most ignorant and careless person, I firmly believe infants would thrive and avoid the many dangers that there are with infant feeding, particularly in the hot weather."

(Signed).....M.C.S., L.R.C.P.  
Medical Officer of Health.

PLUMPED SUPPLIES OF GLAXO ARE  
NOW AVAILABLE

Through  
Messrs. GRINDLAY & Co.  
BOMBAY.

GUARANTEED WOOL  
PURE.

Double  
Fashionable  
Inexpensive

Particulars and Samples from: The Agents,

WADIA WOOLLEN MILLS LTD.,  
Dhoyseth's Building, 25, Waudby Road, Fort, BOMBAY.

Telegrams: "VILLUS"

Telephone: No. 2742

occasions race prejudice blinds their vision and makes them forget good manners, there might possibly be some use for the work of Mr. S. F. A. El Edroos.

## A MARATHI IDYLL.

SUKHA SWAPNA.—(By Shriram Govind Bedekar, Purnak Wadi, Dadar. Price As. 6.)

The poem under review may best be described as an idyll of middle class life. Mr. V. M. Joshi, perhaps the best among living Marathi novelists, has honoured the author with a preface. Like Wordsworth, the poet has aimed at depicting the romantic and the poetic incidents of everyday life. The love of a lover for his beloved is a theme, but perhaps because "woman" is absolutely necessary for the poetry of life, Mr. Bedekar has made fraternal affection his theme. The poem has received prizes from the Deccan Vernacular Translation Society and Indore Gr. Anthotetake Mandal.

## TYPOGRAPHY

Authors' and Printers' Dictionary. By F. Howard Collins. (Price 3s. 6d.) This is a very useful typographical guide, full of valuable hints, instructions and suggestions on printing, publishing and editing. The Dictionary emphasises the importance of economy in printing charges in view of the high cost of production. "There are only two ways in which the cost of a book can be substantially reduced; by increase in the number of copies printed and sold, or by reduction of bulk. It is probable indeed, that the English-reading public will ac-

custom itself to flimsy, perhaps even to paper bindings, and the public will certainly have to put up with smaller and closer type. But such economies will not make any vital difference, you cannot make books cheap by making them nasty." The Dictionary contains all the technical words in the realm of typography and as such it is an invaluable reference book for authors, printers, proof-readers and compositors. It would have been complete if a chapter on marks used for proof correction were added to it. We recommend it to authors, printers and journalists.

Towards the end of 1919 Professor H. J. U. Grierson announced the discovery in Hamilton Palace of a large folio containing designs by William Blake illustrating the 1790 edition of Gray's poems. This album, containing 116 plates in monochrome and six in colours, has been reproduced full size by the colotype process, at the Oxford University Press. A limited edition is now announced by Mr. Milford for immediate publication, with an introduction by Professor Grierson.

Forthcoming books from the Oxford University Press include "The Government of India", a brief historical survey by Sir Courtenay Ilbert sometime Clerk of the House of Commons and Law Member of the Council of the Governor-General of India; a further volume in the "Calendar of the Court Minutes of the East India Company, by Miss Ethel Bruce Sainsbury, carried in the record through 1680-1685 within in the edition of the first volume of Sir Anson's "Law and Custom of the Nation" that dealing with Parli-

by Maurice U. Ower

## LIFE, FIRE, MARINE & MOTOR INSURANCE

(ADDRESS ALL YOUR ENQUIRIES TO

**M. KANJI & Co.**

General Insurance Underwriters.

**LIFE**:-The Manufacturers Life Insurance Co of Canada

**FIRE**:-The Universal Fire and General Insurance Co., Ltd. (India).

The Eastern United Assurance Corporation, Ltd. (Singapore).

The Home Insurance Co of New York.

**MARINE**:-The Universal Fire and General Insurance Co., Ltd.

The Netherlands Lloyd Ltd. (Amsterdam)

**MOTOR**:-The Clive Insurance Co., Ltd.

The Eastern United Assurance Corporation, Limited.

Universal Buildings-4951, Cawasji [Patel Street, Fort, BOMBAY.

Tel. No. 3600.

### INCOME-TAX & SUPER-TAX.

Statutory Statement of Account prepared Audit of Books of Firms UNDERTAKEN.

**B. L. THOSAR.**

Public Accountant.

**BOMBAY COMMERCIAL COLLEGE,**  
Kalbadori Road, BOMBAY.

Successful in Europe and America,  
**Hakim Haji Nawab Ali Khan**



God has sent down from heaven 10 disease but there is a cure for it. Happy news for the sick suffering from the diseases of the eye.

By the loss of sight the countenance becomes ugly and life becomes miserable. I am well experienced in every sort of medical work, and the treatment of the diseases of the eye I have taken up as a special profession. To cure the diseases of the eyes, special use is made of

### MAMIRE-KA-SURMA

which have received the commendation of almost all the European gentry. Blood pills, chronic headache, SOZAK, JIRYANI Rheumatism, loss of vitality, asthma, cough, bronchitis, all kinds of fevers, loss of manly powers and other chronic diseases are specially treated.

Special arrangements for purdah women. The poor are freely admitted. Those who are well-off are charged according to their standing.

Visiting hours From 7 A. m. to 12 noon and From 1 p. m. to 5 p. m. I have received testimonials from the Grecian, Italian, French, British and American Governments besides a number of certificates from the nobility of these countries, which may be seen if desired. Patients can be simply writing general condition of health, obtain proper medicine under V. P. P.

**Hakim Haji Nawab Ali Khan**

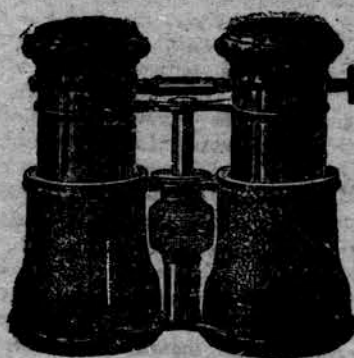
[Sandhurst Road,  
Jhaveri Mansion, Near Marwadi  
Vidyalaya, Bombay No. 4.

**THE PREMIER FIRM**  
in the Laundry and Cleaning Trade.

**DIAMOND JUBILEE WASHING Co.**  
LAUNDERS & CLEANERS, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000.

WATCH YOUR FAVOURITE ANIMAL

WITH  
POWERFUL FRENCH and GERMAN  
PRISMATIC BINOCULARS



available at:-

**VALY FATEH MOHAMMED & Co.,**

WATCH MERCHANTS & JEWELLERS  
30/41, Abdul Rehman Street,  
BOMBAY.

Telephone Nos: 1390 & 5844.

## The Indian Engineering

16, NUMNUM STREET, BO

Largest Stocks of fine products of the best American and British make.

**Bars, Beams, Angles  
Hoops, Plates, Galv  
Plain and Corrugated**

Speciality in complete Steel Structure for Building Roofings, etc., etc.

Over 5,000 Tons always for customer's inspection and and large shipments received

Sizes, etc. in our printed list if interested.

### "HOW TO BECOME A QUALIFIED ACCOUNTANT"

Being indispensable to Accountancy Students and others desirous to know the requirements of Accountancy Profession in India, you should own a copy at once. Pages 308.  
Price Rs. 1-14-0 net. By V. P. P.  
1 Copy, Rs. 2-3-0 2 Copies Rs. 4-0-0.  
Six Copies Rs. 9-12-0.  
Apply S. A. SHARANGDHAR,  
79, Malabar St. Fort, Bombay.

### HIGH CLASS WATCHES, Etc.

Water-Nickel Cylinder Rs. 6-8, Nickel 10 Jew, 12" lever Rs. 12, Ingersol Radiolite Rs. 13-8, Silver 15 Jew, 12" lever Rs. 16, Same "GALOO" Rs. 22, "GALOO" Screw Bezel case Rs. 28, Rolled gold 15 Jew, lever Rs. 30, Same 9 Kt. gold Rs. 40 Do. 14 Kt. gold Rs. 55, Same 18 Kt. gold Rs. 60, Pocket-Ingersol Rs. 6, Radiolite Rs. 8, Ingersol cologne Rs. 8, Do. Radiolite Rs. 9-8, RAILWAY REGULATOR Rs. 4-12, ROSECOPE Rs. 4-12, "RECKET" Alarm time piece Rs. 14, German 'B' time piece Rs. 4, Big Ben Rs. 14, Rolled Gold expanding Bracelet Rs. 5, American 'BNE' time piece Rs. 6-8, RADJUM dial Rs. 8 extra. OTHER VARIETIES AVAILABLE.

Watch Repairing a speciality

**LOVELUCK & Co.,**  
16, LINGACHETTI ST., MADRAS.

### THE NECTAR OF THE EARTH.

Some of our old Ayurvedic manuscripts mention such medicinal plants and their admixture in certain proportions as to produce divine effect. We have discovered and sound on trial such process most effective and have prepared our medicine named **MADAN KAMESARRAS PILLS** on such authority. It is a sure cure against mental and physical debility as it creates vertic power and other necessary elements, adds vigour to the body and gives liveliness by purifying blood and removing chronic dyspepsia also removes stiffness of the body and makes the person lively. Use of one bottle restores the lost power.

**MADAN KAMESARRAS PILLS**: one bottle of 60 pills cost Rs. 15.  
A pure vegetable preparation.

**JITENDRIYA TILA** (Registered) is external application only. A fluid for the private weakness parts. It possesses marvelous power to set right the veins which are disordered through excessive or misuse.

**JITENDRIYA TILA**: one bottle costs Rs. 3. To be had from  
**RAJVAIDYA HIRJI JIVARAM**  
BOMBAY:-Magdevi, Street near Mandri Post  
POONA CITY:-Bodhwar, Peshwa, House  
No. 355.

### ESCA S

IS THE BEST MEDICINE

Weak Chests, Coughs, Colds, Bronchitis

If you have had influenza, fever of Malar and make you a stronger man than before. It is a wonderful officio. You cannot buy any bottle of 4 or 8 Dose one teaspoonful  
Sold by all Chemists everywhere

Wholesale:- MARTIN  
Victoria Buildings, 119, Parson

OVER ONE HUNDRED SATISFIED  
Patented by Dr. J. M. P.



Cooks, Bakes, Fries, refrigerates several dishes no attention needed while cooking as scrubbing worth of Spirit, Charcoal, Coke, Kerosene, Fire, earlier during cooking while you travel.  
Small (1 man) Big (2 m) Special (4 m) Above-special  
Ordinary 21-8 18-8 4 35  
Gram 16-8 21 32 43  
Free Catalogue from-Manager, IC-MIO COOKER  
Can also be had from D. D. POSTWALLA  
MANEKJI & Co. Chauri Gate Street, Fort, BOM  
Price do not include Freight

**THE ARYA PATH  
LODGING AND**

SPECIALLY MEANT

**LINDOOS AND**

GIRGAUM BACK PASS

BOMBAY

Printed and published for the INDIAN N  
PICKTHALL (Editor), at the "Bombay Ch  
Bombay.

QUALITY SUPREME

**Madorina Watches**

THE "HERMADO" CHRONOMETRIC PRECISION  
Steel, Silver case from ... Rs. 25  
16 ct. gold case from ... Rs. 120  
18 ct. gold case from ... Rs. 175  
Illustrated catalogue sent free on application.

**MADORINA WATCH CO. LTD.** Kings Bldg. BOMBAY